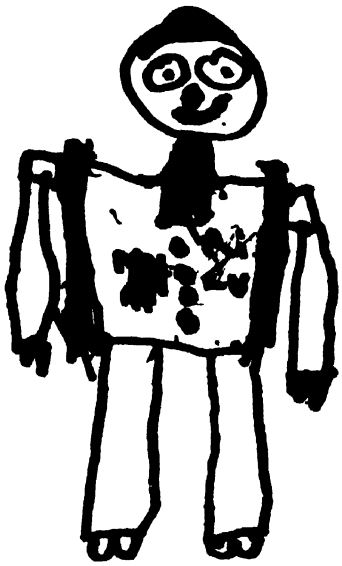

चित्र · रिंकू, पारा, गोवा

इस अंक में...

पाठक लिखते हैं	2
मैं नकल क्यों न करुं?	3
चकमक दोस्त	4
मेरा पन्ना	5
नाटक : हड्डी	8
सवालीराम	17
अपनी प्रयोगशाला	18
कविता : तितली और बिस्तुइया	20
कहानी : दिव्यज्ञान	21
माथापच्ची	24
कविता : नर्म धूप में	27
गिजुभाई की कलम से	28
मानव की कहानी	34
कहानी : गेछो बाबा	36
दिन एक, सूर्य अलग-अलग	39

आवरण : विवेक

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 3 अंक 12 जून, 1988

संपादक:

विनोद रायना

संपादक मंडल:

राजेश उत्साही, हरिप्रसाद जोशी

कला:

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा

ी: 15 रुपए

क: 30 रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता:

एकलव्य

ई-1/208, अरेरा कालोनी

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

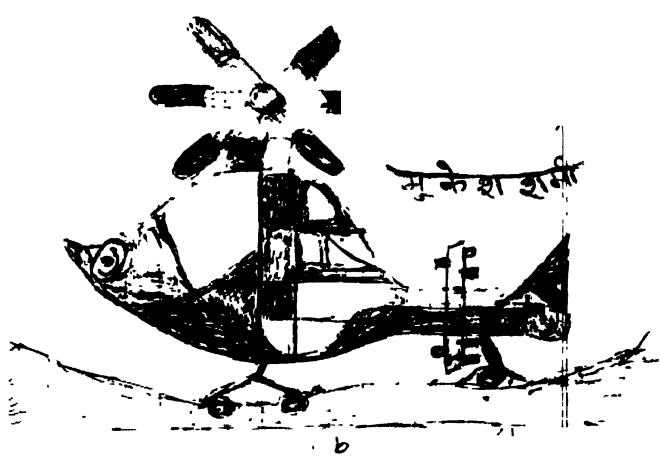

चित्र · मुकेश शर्मा, आठवी, मंदसौर

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

उपग्रह विशेषांकः प्रतिक्रियाएं

आपने अप्रैल 88 की चकमक में मेरी और मेरी सहपाठी बहिनों की कविताएं प्रकाशित कीं इससे मुझे खुशी हुई। आपने हमारे विद्यालय का नाम भी छापा यह बहुत अच्छा रहा, क्योंकि विद्यालय के नाम से ही तो हमारी पहचान होती, और हमारे काम से विद्यालय का नाम ऊंचा होता है। मेरा तो कहना है कि आप सभी रचनाओं के साथ विद्यार्थियों की कक्षा और शाला का नाम लिखा करें। आपने मेरी हिम्मत बढ़ाई है। मैं चित्र भी बनाती हूं। इन छुट्टियों में बने चित्र अपनी प्राचार्या जी को दिखाकर फिर आपको भेजूंगी।

इस अंक में 'पानी की पंचायत' मुझे अच्छी लगी। 'मंत्र' कहानी में भी मज़ा आया। उपग्रहों के बारे में कुछ जानकारी तो समझ में आई लेकिन ज्यादा समझ मे नहीं आई। प्लास्टिक की थैलियों और पन्नियों का हमें क्या करना चाहिए यह बताइए तो हम दूसरों को भी बताएंगे।

☐ श्वेता द्विवेदी, सातवीं, शिक्षा परिसर कुक्षी, धार

(धन्यवाद श्वेता! प्लास्टिक की थैलियों आदि के बारे में तुमने महत्वपूर्ण सवाल पूछा है। इस सवाल पर चकमक के अगले किसी अंक में ज़रूर चर्चा करेंगे सं.—)

अप्रैल अंक पढ़ा। 'पानी पंचायत' पसंद आया। 'मानव की कहानी' लेख काफी ज्ञानवर्धक है। 'गिजुभाई की कलम से' भी बहुत पसंद आया। सवालीराम तथा मंत्र कहानी अच्छी लगी।

☐ **वेणीशंकर पटेल, नरसिंहपुर**

मैं वैसे तो चकमक का दो वर्ष से नियमित पाठक हूं, लेकिन अब मेरी रुचि और बढ़ गई है, क्योंकि इसमें अब विज्ञान के बारे में भी पढ़ने को मिलता है। अप्रैल अंक में ग्रह, उपग्रह और परिक्रमा तथा पानी पंचायत लेख बेहद पसंद आया। गिजुभाई की कलम से लेख बंद न करें।

☐ **एस.एस. राजपूत, नाहली, राजगढ़**

अप्रैल अंक में परीक्षा पर बच्चों की टिप्पणियां दिल को छू गईं।

☐ **लाल्टू, चंडीगढ़**

अप्रैल अंक देखा। मन प्रसन्न हो गया। यह मेरे मन पसंद जानकारी का खज़ाना अर्थात् उपग्रह विशेषांक था। इसे पढ़कर मुझे उपग्रह के संबंध में अनेक नई जानकारी हासिल हुई। निःसंदेह चकमक बच्चों तथा बड़ों दोनों के लिए सर्वश्रेष्ठ बाल विज्ञान पत्रिका है।

☐ **चंद्रशेखरसिंह, देवरीबेलपान**

उपग्रह विशेषांक में गिजुभाई की कलम से, सवालीराम के सवाल, माथापच्ची अपनी प्रयोगशाला आदि रचनाएं अच्छी लगीं। इनके कारण मैं चकमक की ओर बहुत आकर्षित हुई हूं। आप महीने में दो अंक निकालें तो मज़ा और भी ज्यादा हो जाएगा।

☐ **सीमा पांडे, नरसिंहगढ़**

माह अप्रैल की चकमक पत्रिका को जैसे ही मैं घर ले आया कि बच्चों मे होड़ लग गई कि कौन उसे सबसे पहले प्राप्त करे और पढ़े। मैं नहीं समझता था कि चकमक बच्चों को इतनी प्रिय हैं। चंदामामा, पराग, नंदन, नई गुदगुदी आदि पत्रिकाएं तो मात्र मनोरंजन के लिए ही हैं। 'चकमक' तो ज्ञान विज्ञान का भंडार ही बन गई है। उत्तरोत्तर निखार की ओर अग्रसर है।

इस अंक में 'पानी पंचायत' से जल प्रदूषण का ज्ञान आपने प्रिय पाठकों को रुचिकर प्रस्तुतिकरण के माध्यम से करा ही दिया। आशा है इसी तरह आप आगे भी कई समस्याओं को सबके सामने लाते रहेंगे।

'गिजुभाई की कलम से' कहानियां बालकों ने पसंद की। वे चाहते हैं कि आप उनकी अधिक से अधिक कहानियां दिया करें।

ग्रह, उपग्रह और परिक्रमा, मानव की कहानी, सवालीराम, मंत्र कहानी व कविताएं आदि आदि पठनीय व रुचिकर सामग्री का चयन करके आपने अप्रैल के अंक में चार चांद लगा दिए। बच्चे कविताएं भी कंठस्थ कर रहे हैं।

आशा है कि भविष्य में इसका कलेवर सामग्री और भी अधिक आकर्षक व रुचिकर होती रहेगी।

☐ **भगवत भट्ट 'मिहोना', भिंड**

चकमक मेरी प्रिय पुस्तिका है। इसे में हर माह तो नहीं पढ़ता था। लेकिन अब पढ़ने लगा हूं। जब से हमारे धार की चकमक (एकलव्य) संस्था की कार्यकर्त्ता हमारे स्कूल में आई हैं तब से ही मैं पढ़ने लगा हूं। इस पर मैंने एक कविता लिखी—

"नहीं चाहिए चटकु मटकु, नहीं
चाहिए टकमक
हमें तो चाहिए केवल अपनी
प्यारी पुस्तक चकमक।"

☐ **वसीम, कबीर मार्ग, धार**

मैं चकमक की एक नई पाठक हूं। मेरा जन्मदेश त्रिचूर है। केरल शास्त्र साहित्य परिषद् की 'युरेका' मासिक में चकमक के बारे में कुछ वार्ताएं लिखा था। चकमक पत्रिका बहुत उपयोगी है। आशा है दक्षिण भारत के बच्चों को राष्ट्रभाषा पढ़ने को चकमक प्रोत्साहित करेगी।

☐ **बिता.डी.एस, 12 वर्ष, मतिलाकाम, केरल**

बाबा (नागार्जुन) और मैं चकमक पढ़ते हैं। आपकी यह पत्रिका बच्चों में सृजनात्मक प्रतिभा जगाने के लिए बेजोड़ है। बल्कि हिन्दी में अकेली ऐसी पत्रिका है—जिसे हम सभी पसंद करते हैं।

☐ **हरिपाल त्यागी, दिल्ली**

चकमक देखकर बहुत प्रसन्नता होती है यह सचमुच बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ पत्र कहा जा सकता है। कविताओं में थोड़ा सुधार चाहिए क्योंकि वह केवल भाव ही नहीं होतीं। वह लयात्मक होना ही चाहिए।

☐ **निरंकार देव सेवक, बरेली**

धाराखेड़ी स्कूल में मुझे आए आठ माह हुए हैं। इस स्कूल में चकमक पुस्तक प्रतिमाह आती है इसे पढ़कर मुझे अच्छी बातों का ज्ञान मिलता है। अप्रैल माह में छपी परीक्षा कहानी जिसकी लेखिका कु. नीता जोशी कुक्षी, धार हैं पढ़कर, मुझे ऐसा लगता है कि आज शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी से खिलवाड़ किया जाता है। जो मेहनत करते हैं। और यह सच है। इस आठ माह की शिक्षा का अनुभव मुझे हुआ और मैं इस अन्याय के खिलाफ हूं। पर न्याय पाने के लिए सभी को आगे आना चाहिए तभी शिक्षा की बिगड़ती हुई नीति में सुधार आ सकेगा।

☐ **संगीता लव्हात्रे, धाराखेड़ी, शाजापुर**

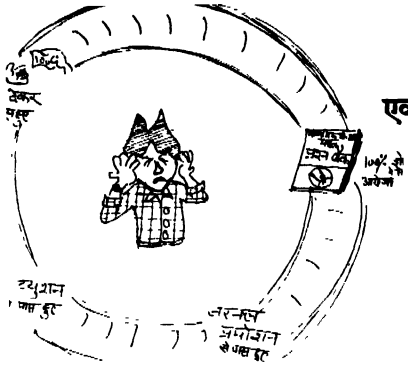

एक विद्यार्थी के पालक व शिक्षक से कुछ प्रश्न

बताइए मैं नकल क्यों न करूं?

अब मैं कक्षा 12 में पढ़ता हूं। परीक्षा का नाम लेते ही मैं घबरा जाता हूं। जब मैं इसके कारणों को खोजने की कोशिश करता हूं तो मेरे सामने पहली कक्षा से आज तक का पूरा दृश्य सामने आ जाता है।

मुझे पहली कक्षा से चौथी तक तो कभी महसूस ही नहीं हुआ कि परीक्षा क्या होती है? एक कक्षा से अगली कक्षा में बढ़ता गया। पांचवी की परीक्षा में हमारे सर ने प्रश्नों के उत्तर ब्लेकबोर्ड पर लिख दिए। हमें कहा गया कि यह 'बोर्ड की परीक्षा' है। छटी व सातवीं कक्षा में ट्यूशन करता था अतः पास होने में कोई दिक्कत नहीं आई। आठवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के लिए ट्यूशन के साथ-साथ मेरे पिताजी ने हमारे सर को कुछ रुपए दिए थे। नौंवीं कक्षा में 'जनरल प्रमोशन' की वजह से दसवीं में पहुंच गया। दसवीं कक्षा के लिए बोर्ड ने प्रश्न बैंक छापे थे, उन्हीं में से प्रत्येक विषय के 5-7 प्रश्न रट लिए पास हो गया। ग्यारहवीं कक्षा में फिर स्थानीय परीक्षा थी अतः पास हो ही गया। अब 12 वीं परीक्षा सिर पर है। मैंने अब तक कभी मन लगाकर पढ़ाई की ही नहीं। क्योंकि न तो स्कूल में कभी ठीक से पढ़ाया गया न ही घर में किसी ने ध्यान दिया। अब मुझे बहुत दुख व गुस्सा है अपने स्कूलों के प्रति व माता पिता के प्रति।

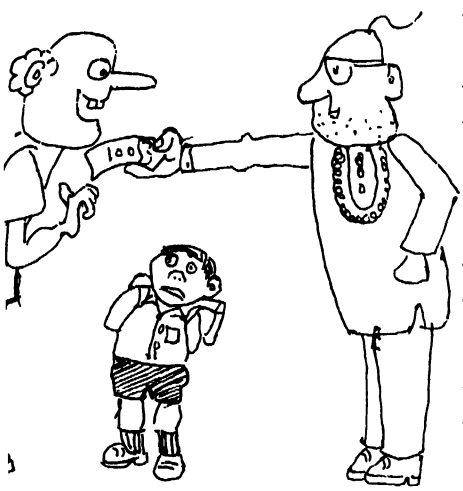

पिताजी कहते हैं ट्यूशन कर ले। कोंचिग क्लासेस में पढ़ ले। किसी को कुछ लेना देना है तो पैसे ले जा। परंतु मेरी पढ़ाई की नींव इतनी कमजोर है कि पढ़ने पर कुछ भी समझ नहीं आता। अब मैं नकल न करूं तो आप ही बताईए क्या करूं?

यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं है,देवास के ही स्कूल के एक छात्र के अनुभव हैं। हमारे शहर में ऐसे विद्यार्थियों की संख्या एक-दो नहीं बल्कि सैकड़ों हजारों में होगी। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है? शिक्षक, पालक, शिक्षातंत्र या पूरी सामाजिक व्यवस्था। शिक्षक पालकों को दोष देते हैं, पालक शिक्षकों को। परंतु इस आपाधापी में बच्चे पिसते जा रहे हैं। क्या इस परिस्थिति को सुधारने व बदलने के लिए कोई बाहरी लोग आएंगे? अधिकांश लोग सारे कुएं में ही भांग गिरी है, कहकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं। आखिर कुएं में भांग आई कहां से? और यदि आ भी गई तो इसे ठीक कौन करेगा?

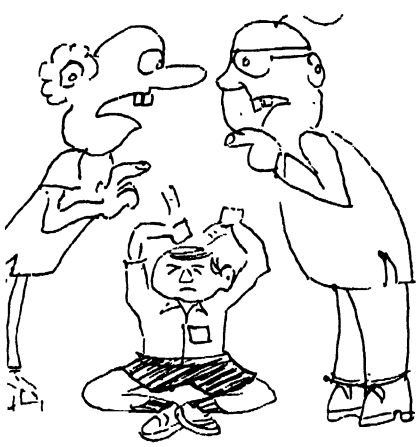

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

मैं शिक्षकों से पूछता हूं। आप बच्चों को बिना पढ़ाए, सिखाए अगली कक्षा में क्यों भर्ती करते हो? यदि आपकी मजबूरी है तो इसका दुष्परिणाम हम विद्यार्थियों को क्यों भोगना पड़ रहा है। मैं पालकों से भी पूछता हूं क्या आपने कभी स्कूल/कालेज जाकर शिक्षक से पूछा कि आपकी संतान वहां क्या करती है? प्रत्येक शिक्षक व पालक केवल अपनी मजबूरी के रोने रोते रहेंगे तो हम जैसे बच्चे शिक्षित न होकर केवल साक्षर ही हो पाएंगे। आप हम से बड़ी-बड़ी उम्मीदें मत रखना। कुछ सोचिए, कुछ करिए।

देवास के जन चेतना समूह ने यह पर्चा प्रकाशित किया है। जन चेतना समूह इस कार्य के लिए पहल करने जा रहा है, क्यों न हम सब मिल-जुलकर इस कार्य को आगे बढ़ाएं। जन चेतना से, पालक, शिक्षक, छात्र या अन्य कोई नागरिक भी जुड़ सकता है।

संपर्क - जन चेतना-61, जेलरोड, देवास

चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

1 पवन कुमार नागटे, 12 वर्ष
2 चित्र कहानी संग्रह करना, भाषण प्रतियोगिता में भाग लेना हमेशा प्रसन्न रहना
३ पोस्ट-खमापानी, जिला-छिंदवाडा

1. संजीत राय, 15 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना
3. शा.उ.मा शाला, बाकल, त-मिहीरा, जिला-जबलपुर
1. विजय गंगवाल, दसवीं
2. क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना
3 शा.उ.मा शाला, धनोरा, बस्तर
1. संजय काले
2 पढना, खेलना, दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं समाचार पत्रों में पत्र व्यवहार करना
3 शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला, महेश्वर

1 छोटेलाल पटेल, 17 वर्ष
2 मजाक करना, काम करना, ताश खेलना
3 उ मा शाला, मोठी, चापा
1 राकेश कुमार सिंह, 17 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, पढना
3 द्वारा रतनसिंह ठाकुर, कर्गी रोड, बिलासपुर
1 प्रणव मिश्रा, छठवीं
2 क्रिकेट खेलना, कामेंट्री सुनना
3 पूर्व मा शाला, चिल्की माजा, जिला-दुर्ग 491 993
1 बरदीचंद्र, आठवी
2 विज्ञान की किताब पढना
3 चिता खेडी, मदसौर
1 छीतर, 15 वर्ष
2 मित्रता करना, पुस्तक पढना
1 चद्रशेखर सिंह राजपूत, 18 वर्ष
2 पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3 देवरी बेलपान, मतसगरा, बिलासपुर-495 330
1 दया शकर वर्मा, ग्यारहवीं
2 विज्ञान पहेलिया लिखना, बूझना, पत्रिकाए पढना
1 भारत सुमन, दसवी
2 क्रिकेट खेलना एवं क्रिकेट से सबधित जानकारी प्राप्त करना
1 भोलेशकर वर्मा, दसवी
2 क्रिकेट
1 लालचद वर्मा, छठवी
2 नई-नई फिल्में देखना, क्रिकेट खेलना
1 दुर्गावती वर्मा, दसवी
2 बागवानी लगाना, मित्रता करना
1. धर्मेन्द्र वर्मा, पाचवी
2 अमर क्रातिकारी आजाद के बारे में पढना
सबका पता नार्थ चादामेटा कालरी भमोडी, छिंदवाडा-480 449

1 निलोफर जाफरी, 9 वर्ष
2 ज्यादा पढ़ना, कम सोना, कम खेलना, पत्र मित्रता
3 जे बी मिशन स्कूल, टेहरका, टीकमगढ
1 सजय अग्रवाल, 16 वर्ष
2 पत्र मित्रता, कार्टून बनाना, पढना
3 771, गांधी चौक, जहागीराबाद, बुलदशहर-202 394

1 ओम डबकरा, बारहवीं
2 क्रिकेट खेलना
3 द्वारा बी एल. डबकरा, उपागज मनासा-458 110
1 प्रशांत कुलश्रेष्ठ, 9 वर्ष
2 चकमक व अन्य बाल पत्रिकाए पढना, कल्पना से कहानिया लिखना, नई-नई बातें जानना
1 हितेन्द्र शर्मा, 10 वर्ष
2 अपना पाठ्यक्रम पूरा करना, हर काम में आगे रहना, गीत गाना, खूब खेलना
दोनों का पता शा प्रा.वि. तिलोंजरी, मुरैना
1 दीपक शर्मा, 11 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, चकमक पढना, नए मित्र बनाना, घूमना
3 शा मा वि तिलोंजरी, मुरैना
1 विश्वास गुप्ता, 8 वर्ष
2 चकमक के चित्र देखना
3 प्राथमिक शाला, झकनावदा, झाबुआ
1 अगदीश चद्र, 13 वर्ष
2 कबड्डी खेलना, घूमना, फिरना आदि
3 ग्राम-कुडाना, इदौर
1 राजकुमार सोनी, 15 वर्ष
2 पढाई व नित्य मार्शल आर्ट का अभ्यास
3 द्वारा आर.एल सोनी, क्वाटर न 563/4/ A, बालकोनगर, कोरबा, बिलासपुर-495 684
1 कुमार गौरव जैन, तीसरी, 8 वर्ष
2 पढना, चित्र बनाना, मिटटी के खिलौने बनाना
1 कुमार सौरभ जैन, 5 वर्ष
2 पढना चित्र बनाना
दोनों का पता मुकाम-पोस्ट जैतवाग जिला-सतना-485 221
1 शैलेश नागदा, 15 वर्ष
2 चकमक व अन्य विज्ञान पत्रिकाएं पढना
3 56, यशवत निवास, नई आबादी, गोड न 1, मदसौर
1 किशनलाल चढार, 16 वर्ष
2 फूल वाले पौधे लगाना, पत्र मित्रता
3 पोस्ट-सुनवाहा, गयसेन-464 881
1 राजकुमार सिंह, 13 वर्ष
2 क्रिकेट, पढ़ना, पेंटिग
1 नरेन्द्रसिंह, 10 वर्ष
2 दादागीरी, खेलना, दौड़ना, हाकी
1 बंटी गजा, 6 वर्ष
2 पढना, चित्र बनाना, कुश्ती लडना
1 पिंकूराजा, 6 वर्ष
2 जूडो कराटे
सबका पता राजावाडा आम्बा, रतलाम 457 550
1 शालिनी श्रीवास्तव, आठवी
2 पत्रिकाए पढना, पर्यटन करना
3 शासकीय आर के. गौतम, उ मा विद्यालय मुख्तारी त मिहोरा, जबलपुर

1. रोहिताश्व त्रिपाठी, 16 वर्ष
2. अभिनय करना, पत्र मित्रता
3. शासकीय हिंदू उ.मा. शाला, बैरन बाजार, रायपुर
1. कमल सराफ, 14 वर्ष
2. शतरंज, क्रिकेट खेलना, किताब पढ़ना
1. पुष्कर सराफ, 10 वर्ष
2. खेलना, किताब पढ़ना
1 निलेश सराफ, 8 वर्ष
2. खेलना, किताब पढ़ना
सबका पता 12, नर्मदा मार्ग महेश्वर, खरगोन (म.प्र.)
1 सुषमा उपाध्याय, दसवीं
2 पत्र मित्रता, डाक टिकट संग्रह करना, अभिनय, साहित्य सृजन
3 द्वारा श्री गाधी आश्रम, खादी भडार, जनता प्रेस के पास, मनेन्द्रगढ़-497 442
1 कनेश चद्र, 11 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, पढ़ना
3 शा.मा.वि. नामली, रतलाम
1 संजय कुमार, 8 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, घूमना, पढना
3 मा वि. कुड़ाना, सावेर, इंदौर
1 पदुभलाल साहू, 18 वर्ष
2 पढना, पत्र मित्रता, अच्छी पुस्तके पढना आदि
3 शा उ मा.वि मिघरा, मालखरौदा, बिलासपुर
1 विद्या शर्मा, आठवीं
2 चकमक पढ़ना, खेलना, घूमना
3 गांव मांडिया, मदसौर
1 रामरहीश पटेल, ग्यारहवीं
2 पढना, व्हालीबॉल खेलना
1 विजय पटेल, 15 वर्ष
2 गणित लगाना, विज्ञान के प्रयोग करना
1 राजाबाबू पटेल, 16 वर्ष
2 कबड्डी खेलना, अंग्रेजी लिखना
1 भागवत प्रसाद पटेल, 13 वर्ष
2 चकमक पढना
1. राम प्रपच पटेल, 12 वर्ष
2. गायों की देखभाल करना, तालाब में तैरना
सबका पता . ग्राम मनटोला, पोस्ट भमरहा जिला शहडोल
1 पृथ्वेन्द्र सिंह परमार, 12 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, पढ़ना
1 दीपेन्द्रसिंह परमार
2. कहानी की पुस्तके पढ़ना
दोनों का पता माध्यमिक शाला भगवानपुरा (खंडवा)
1 अजना उपाध्याय 'नेपाली', 14 वर्ष
2 पत्र मित्रता, डाक टिकट सग्रह, पुस्तक पढ़ना, ग्रीटिंग इकट्ठा करना
3 अग्रवाल लाज मार्ग, मकान 9, मनेन्द्रगढ, सरगुजा-497 442
1 धर्मेन्द्र खरे, 11 वर्ष
2 पढना, साइकिल चलाना, डाक टिकट सग्रह करना
3 द्वारा ब्राच पोस्ट मास्टर, दुमदुमा, टीकमगढ़
1 जगदीश पटेल, 13 वर्ष
2 क्रिकेट खेलना, चकमक पढना
1 अरविद पटेल, 13 वर्ष
2 फुटबाल खेलना, सायकिल चलाना
दोनों का पता कुड़ाना गाव, सांवेर, इंदौर

जब गरमी का मौसम आता

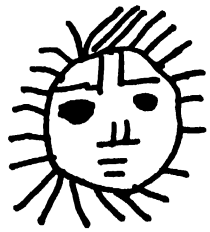

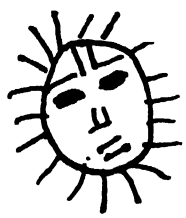

जब गरमी का मौसम आता
जब पंखा घर में चल जाता
गरम-गरम लू चलने लगती
चिड़िया चीं चीं करने लगती
मैं भी गाती झूम-झूम कर
आम भी पेड़ों से गिर जाते
जब मैं उनको झट-पट खाती
जब गरमी का मौसम आता!

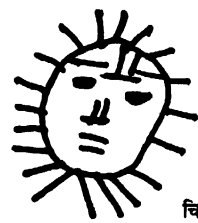

चित्र : स्वाती सागर, भोपाल

□ शीरीं, पांचवीं, दिल्ली

जब मेला घूमने गए

एक बार मैं और मेरे दो मित्र मेला देखने गए। हम तीनों सायकल से चले। जब हम मेले में पहुंचे तो हमने पहले चाय पी और फुलकी खाई। फिर हमने दुकान देखीं। मिठाई, पान, तथा दूसरी दुकान। हमने सोचा अपने छोटे भाई-बहनों के लिए कुछ सामान ले लें। दोस्तों ने कहा, 'हां यार ले लो। मेरी छोटी बहन बंटी कह रही थी कि भैया जब तुम मेले में जाओ तो हमारे लिए कुछ सामान लाना।'

तभी हमने देखा कि एक दुकानदार एक आदमी से कह रहा है कि तुमने ही मेरा सोने का बटन लिया है। वह आदमी मना कर रहा था। तो लकड़ी से उन दोनों के बीच मार-पीट होने लगी। हमने कहा भाई मत लड़ो। फिर हम छुड़ाने लगे तो उन्होंने हमारे लकड़ी मार दी। इतने में पुलिस आ गई। और उन दोनों को पकड़कर ले गई। जब हम वापस आए तो हमने अस्पताल जाकर अपने दोस्त को पट्टी बंधवाई। वह कुछ दिनों बाद ठीक हो गया।

□ राजेश पांचाल, आठवीं, नामली, रतलाम

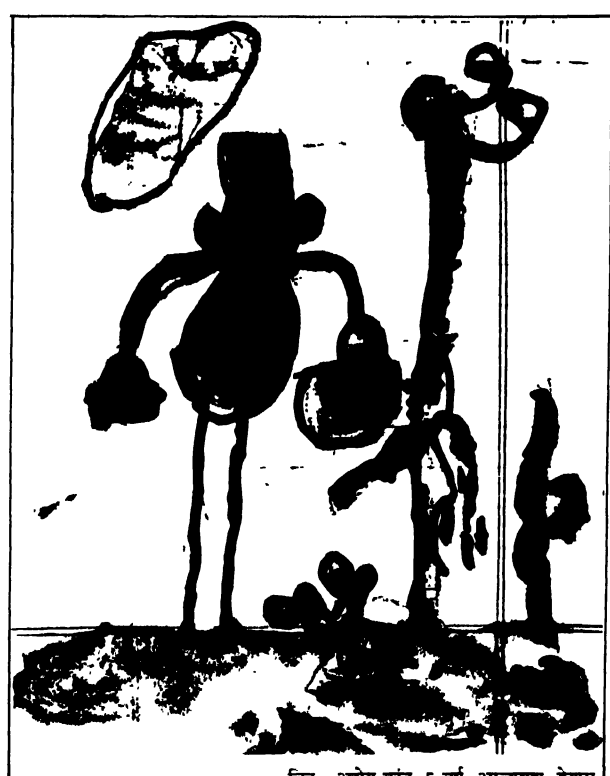

चित्र . अमेय कांत, 5 वर्ष, अरलावदा, देवास

परीक्षा के बाद

परीक्षा समाप्त हो जाने के पश्चात प्रत्येक विद्यार्थी के मन में यह प्रश्न प्रायः घूमता है कि इतनी लंबी गर्मियों की छुट्टी को कैसे बिताया जाए।

परीक्षा के पहले बहुत से बंधन होते हैं। मां-पिताजी और अन्य बड़े लोगों की डांट सुनना पड़ती है। परीक्षा के बाद इससे भी छुटकारा मिल जाता है। ढेरों विषय की पुस्तकों में उलझे रहना पड़ता है। परीक्षा के बाद ये पुस्तकें एक तरफ रख दी जाती हैं। गृहकार्य आदि के कारण स्कूल में शिक्षकों की जो डांट सुननी पड़ती थी, मार खानी पड़ती थी अब उससे भी पीछा छूट गया।

लेकिन क्या इनसे छुटकारा पाकर दिमाग को शांति मिल जाती है? नहीं! इसका कारण है कि मनुष्य शांत नहीं बैठ सकता, वह किसी न किसी कार्य में उलझे ही रहना चाहता है। चाहे वह कार्य मानसिक हो, शारीरिक हो, या अन्य। एक कार्य को समाप्त करके वह फिर दूसरे कार्य की तलाश में लग जाता है।

कई लड़के गर्मियों की छुट्टी को खेल-खेलकर ही बिता देते हैं। लेकिन खेलना ही गर्मियों की छुट्टियां बिताने का एकमात्र साधन नहीं है। यदि सोचने बैठें तो अनेक कार्य निकल आएंगे जिन्हें करके गर्मियों की लंबी छुट्टियां बिताई जा सकती हैं।

कहानी, कविता लेखन, चित्रकारी, पुस्तकों का अध्ययन आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिससे गर्मी की छुट्टियां बड़ी सुखद बन जाती हैं। समस्या यह उठ खड़ी होती है कि किस विषय पर कहानी, कविता लिखी जाए या चित्रकारी की जाए। यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। हमारे जीवन में अनेक घटनाएं घटती हैं। घटनाएं प्रत्येक के जीवन में घटती हैं। इन घटनाओं से संबंधित कहानियां, कविताएं लिखी जा सकती हैं। आज के वातावरण को देखकर भी लेख लिखे जा सकते हैं। चित्र बनाए जा सकते हैं।

☐ अनिल बंदेवार, 16 वर्ष, छिंदवाड़ा

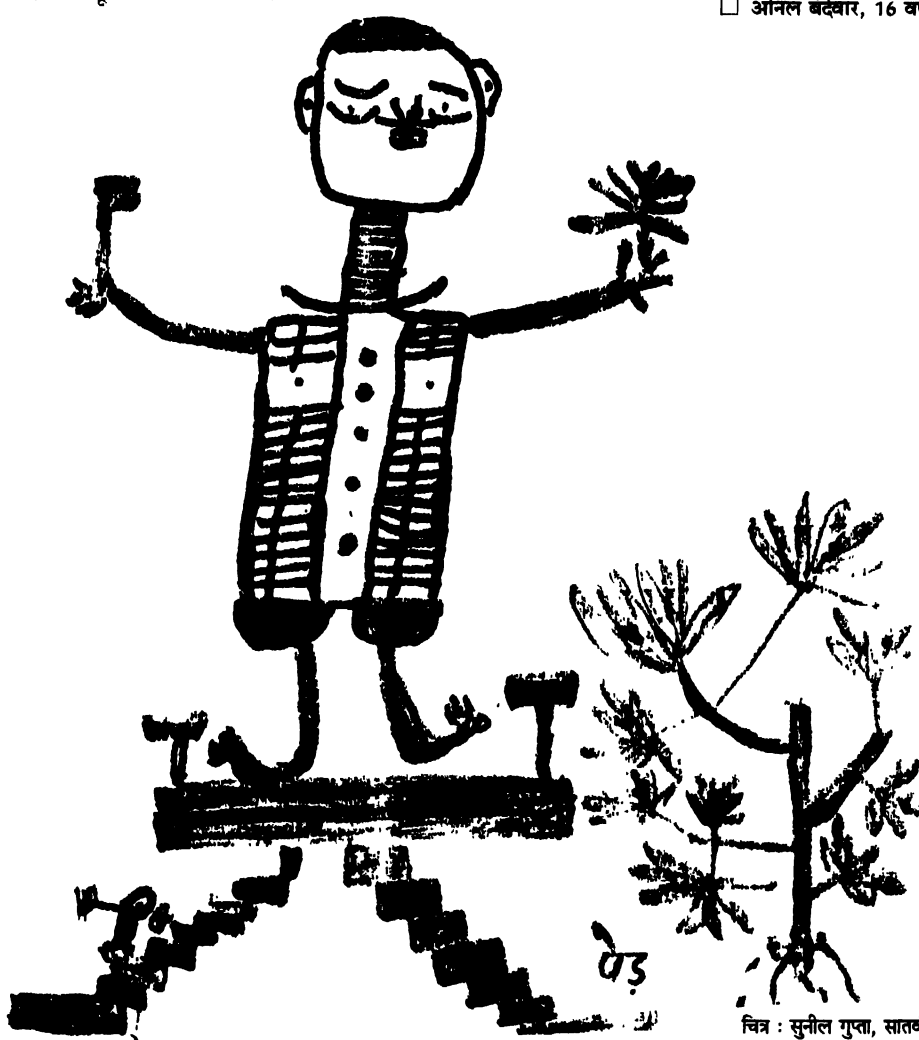

चित्र : सुनील गुप्ता, सातवीं, बालागुड़ा

बबलू और गधों की टक्कर

एक बार सुबह के आठ बजे मैं घर से सदर बाज़ार की ओर जा रहा था। स्टेशन रोड की तरफ से तीन गधे जा रहे थे। तभी उधर के कुत्ते उन पर भौंके और झपट पड़े। गधे ज़ोर-ज़ोर से भागने लगे। उधर से बबलू आनंद आटोगैरिज के सामने से सन्न सायकल से आ रहा था। दौड़ते हुए गधों में से एक बबलू की सायकल से टकरा गया। बबलू सायकल के नीचे आ गया। गधा उसके ऊपर। इसी प्रकार दूसरा गधा उस गधे पर गिर पड़ा। तीन गधे उस सायकल पर गिर पड़े। और फिर कुत्ते भी उन पर गिर पड़े। वहां गधों और कुत्तों का ढेर हो गया। फिर कुत्ते उठकर भागे, फिर गधे उठकर सदर बाज़ार की ओर बहुत दूर भाग गए। बबलू सायकल के नीचे ही पड़ा रहा।

उसके बाद बबलू को उठाकर हास्पीटल ले गए। वहां बबलू की जांच चालू हुई। पर बबलू इस प्रकार की बात देखकर रोया नहीं। पर सब लोग इस प्रकार की बात देखकर ऐसे हंसे कि रोने लग गए। मेरी भी हंसी ऐसी चली कि पेट में दर्द होने लगा। फिर मैं भी हास्पीटल गया।

जब बबलू ठीक हो गया तो वह गधे से बहुत दुश्मनी रखने लगा। जब कभी गधा आता वह लकड़ी से मार कर भगा देता था। फिर दिवाली आई। बबलू फटाके लाया और उसने एक तरकीब सोची। उसने कुछ फटाके टी.वी. के पीछे छिपा दिए। कुछ फटाके लेकर वह दोस्तों को बुलाकर गांव में गधा ढूंढने के लिए गया।

उनको एक कुत्ता और एक गधा मिला। उन्होंने कहा कि आज के दिन हम गधा यज्ञ एवं कुत्ता यज्ञ करेंगे। तो उन्होंने गधे और कुत्ते दोनों को खड़ा करके उनका यज्ञ किया। दोनों को सजाकर उनके पूछंड़ी पर बड़े फटाके बांध दिए। तब गधा चीपों-चीपों करता हुआ गांव में घूमा। फिर गधा ठाकुर के घर में घुस गया। जब फटाके फूटे तो ठाकुर की पगड़ी गधे के पैर में आ गई। ठाकुर इस अपमान को देख नहीं पाया और उसने बबलू को सजा दी।

उधर कुत्ते की पूंछ में भी फटाके बंधे थे। कुत्ता बबलू के घर में घुस गया। और टी.व़ी. के पीछे जाकर बैठ गया। उसे पता नहीं था कि यहां भी फटाके पड़े हुए हैं। जब टी.वी. के पीछे वाले फटाके फूटे तो टी.वी. की एक-एक चीज़ गांव में उड़ गई। इस प्रकार बबलू को हानि हुई। बबलू ने कहा कि आज से गधासिंह और कुत्तासिंह दोनों ही मेरे मित्र हैं।

☐ राजेश भरावा, आठवीं, नामली, रतलाम

सूखा

कहां है सूखा?
कहां है सूखा?

मुखिया की नित होती तोंद मोटी।
नेताओं की रोज बदलती टोंपी।।

कहां है सूखा?
कहां है सूखा?

अफसरों की बढ़ती शान-शौकत।
गांव शहर सब उनकी अमानत।।

कहां है सूखा?
कहां है सूखा?

अखबारों में पढ़ा है सूखा।
मास्टर जी से सुना है सूखा।।

कहां है सूखा?
कहां है सूखा?

☐ मुबारिक, आठवीं, दताना, उज्जैन.

पहेलिया

वह पानी पी न सका
गधा थका हुआ था!

पत्नी उदास थी
गला सूख रहा था!

उसे नौकरी करनी पड़ी
पशु मर रहे थे!

बच्ची छत से गिर पड़ी
रात को सोया न गया!

पकोड़ा खाया न गया
जूता पहना न गया!

☐ निशा व्यास, गढ़ सिवाना, राजस्थान

हड्डी

दृश्य : 1

(मंच पर जंगल का दृश्य लगा हुआ है। पेड़-पौधे, लताएं तथा विभिन्न प्रकार के वृक्षों से पूरा मंच सजा हुआ है। जंगली जानवरों के बोलने तथा चिड़ियों के चहचहाने आदि की आवाज़ें आ रही हैं। रात का पिछला पहर समाप्त हो रहा है और प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता है। प्रकाश के साथ ही साथ आवाज़ें बढ़ती जाती हैं। पानी बहने या झरने के गिरने की आवाज़ भी स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगती है। दूर से घुंघरू बजने की आवाज़ निकट आती जाती है और एक वृक्ष के पीछे से निकल कर परी सामने आ जाती है। कुछ देर नृत्य करने के बाद परी गाती है।)

परी : नन्हे, मुन्ने प्यारे बच्चों
नटखट बच्चों, चंचल बच्चों
आओ सुनाएं तुम्हें कहानी
आओ सुनाएं तुम्हें कहानी।

बहुत साल पहले यह धरती
गरम आग का गोला थी
फिर धीरे धीरे धीरे धीरे
ठंडी होती गई ये धरती

इसी बदलती धरती की
ये सच्ची एक कहानी है।

(नाचते हुए परी वृक्षों के पीछे चली जाती है और धीरे-धीरे प्रकाश समाप्त हो जाता है।)

दृश्य : 2

(मंच पर जंगल का वही पुराना दृश्य। धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ता है। मंच के तीनों ओर से चूहों का प्रवेश। चूहे नृत्य करते मंच के बीचों-बीच आ जाते हैं। सब चूहे मिल कर गाते हैं।)

चूहों का समूह गान :

ये पूरा जंगल हरा भरा
ये पेड़ लता ये वसुंधरा
ये चंचल झरनों का पानी
पानी पर बादल की छाया

ये घिरते बादल घुमड़-घुमड़
ये आते बादल उमड़ उमड़
सब सबका है, सब सबका है
हर चीज़ यहां हम सबकी है

हम मिल जुलकर सब रहते हैं
जो होता है सब सहते हैं।

(धीरे-धीरे मंच के पीछे से कुछ और चूहे आते हैं। चूहों की पहली मंडली पीछे हट जाती है और दूसरी मंडली मंच के मध्य में आ जाती है और वह समूहगान प्रारंभ करती है।)

चूहों की दूसरी मंडली का समूहगानः

नौकर मालिक कोई नहीं
सेवक स्वामी कोई नहीं
मेरा तेरा कोई नहीं
सब सबका है, सब सबका है
सब सबका है, सब सबका है

जब भूख लगे तब खाते
जब नींद लगे तब सोते
जब आंख खुले तब उठते
जब जी चाहे तब गाते

(अंतिम पंक्ति पर सभी चूहे समूहगान और नृत्य में शामिल हो जाते हैं।)

दृश्य :3

(जंगल का पुराना दृश्य। आंधी चलने की आवाज़ आती है। दूर से कुत्तों के रोने की आवाज़ भी आती है। प्रकाश बहुत कम है और पूरा वातावरण बोझिल बोझिल सा लग रहा है। फिर किसी खतरनाक जानवर के चलने तथा डगालें टूटने की आवाज़ के साथ मंच पर बिल्ले का प्रवेश।)

बिल्ला : मैं बिल्ला, शेर हूं जंगल का
मैं चूहों को खा जाता हूं
मैं शक्तिवान हूं शक्तिवान
मैं चूहों को खा जाता हूं।

मुझको आता हुआ देखकर
चूहे सब छिप जाते हैं
पर उनको खोज ही लेता हूं
मैं उनको खूब सताता हूं
फिर उनको मैं खा जाता हूं
आज भी मुझको भूख लगी है।

कहां हैं चूहे सारे?
कांपते होंगे डर के मारे
अच्छा तो छिप जाता हूं मैं
जब निकलेंगे चूहे चुहियां
तब मैं उनको खा जाऊंगा
पेट की आग बुझा जाऊंगा।

(बिल्ला छिप जाता है। कुछ देर बाद चूहे निकलते हैं। सब डरे हुए हैं। एक चूहा आगे है, बाकी सतर्कता से उसके पीछे हैं।)

चूहा-1 : देखो देखो देखो देखो
देख के देखा चल मेरे भाई
हां मेरे भाई हां मेरे भाई
बिल्ला हमको खा जाएगा
पकड़ेगा चबा जाएगा

(अचानक बिल्ला निकलकर हमला करता है और चूहे भागते हैं और वह एक चूहे को पकड़ लेता है। चूहा चिल्लाता है। बिल्ला उसको खा जाता है। धीरे-धीरे मंच पर अंधकार।)

दृश्य : 4

(जंगल के कोने का उदास दृश्य। सब चूहे चुपचाप उदास बैठे हैं। कुछ रो रहे हैं कुछ अपने हाथों से अपने चेहरे छिपाए हैं।)

चूहा-1 : रोने से क्या काम चलेगा
बात बहुत गंभीर है भाई
ऐसी कुछ तरकीब करें हम
मिल जुलकर कुछ काम करें हम

चूहा-4 : बिल्ला से लड़ने की सोचें
उससे अब भिड़ने की सोचो
जब तक हम सब डरते रहेंगे
तब तक हम सब मरते रहेंगे।

चूहा-3 : सीधे साधे चूहे हैं हम
मिल जुलकर सब रहते हैं हम
किसका क्या कुछ लेते हैं हम
फिर क्यों बैरी पीछे पड़ा है।

चूहा-1 बात पते की कहते हो
लेकिन उससे कैसे भिड़ें
पंजे उसके बड़े बड़े हैं
दांत हैं उसके पैने पैने
दुम उसकी रस्से की तरह है
खाल है उसकी गैंडे जैसी
उसके मुंह से खून लगा है।

(चूहा-3 को अचानक सामने पड़ी किसी जानवर की बड़ी सी हड्डी दिखाई देती है। वह हड्डी उठा लेता है और उसका नुकीला सिरा देखता है और खुश हो जाता है।)

चूहा-3 : देखो इसको देखो इसको
मुझको यह हथियार मिला है
देखो इसको देखो इसको
कितना पैना कितना पैना
कितना मोटा कितना मोटा

(सब चूहे हथियार देखते हैं)

चूहा-3 : अब डरने की बात नहीं है
कल जब बिल्ला आएगा
तब मैं उसको आगे बढ़ कर
ऐसा हाथ एक मारूंगा
कि चीं चीं चीं करता
बिल्ला भाग ही जाएगां।

दृश्य : 5

(जंगल का दृश्य जहां एक ओर बिल्ला खड़ा है और दूसरी ओर चूहे पंक्ति में खड़े हैं। सबसे आगे चूहा-3 खड़ा है और उसके हाथ में नुकीली हड्डी है।)

बिल्ला : वाह री किस्मत वाह री किस्मत
सारे चूहे अपने आप
मरने को तैयार खड़े हैं।
मरने को तैयार खड़े हैं।

चूहा-3 : हम तुमसे कमज़ोर नहीं हैं
हम कोई मजबूर नहीं हैं

बिल्ला (ठहाका)
तेरी मौत ही आई
या आंखें पथराई हैं
देख ये मेरे पंजे देख
देख ये मेरा बाजू देख
देख ये मेरी ताकत देख

(बिल्ला हमला करता है। चूहा-3 अपनी हड्डी निकाल कर उसे मार देता है। वह चोट खा कर गिरता है। चूहा फिर हड्डी मारता है।)

चूहा-3 : देख संभल जा मोटे बिल्ले
राह पे अपनी आ जा बिल्ले

(बिल्ला उठ कर झपटता है। चूहा फिर मारता है, वह गिरता है।)

चूहा-3 : देखे तूने मेरे हाथ
ये सब भी हैं मेरे साथ
मिल कर सब वार करेंगे
तुझको हम बर्बाद करेंगे।

(बिल्ला उठ कर भाग जाता है। चूहे खुशी में चिल्लाते हैं।)

दृश्य : 6

(चूहा-3 बहुत प्रसन्न है। वह जंगल में अपनी हड्डी लिए घूम रहा है। वह बहुत निडरता से इधर-उधर देख रहा है और गा रहा है।)

चूहा-3 : कैसी अच्छी चीज़ मिली है
मेरी तो तकदीर खुली है
बिल्ला मुझसे डरता है
नहीं वो मुझसे लड़ता है

कैसी अच्छी चीज़ मिली है
मेरी तो तकदीर खुली है
अब है मेरे हाथ में ताकत
ताकत ताकत ताकत ताकत

इतनी ताकत इतनी ताकत
जितनी किसी के पास नहीं है।

(चूहा-2 आता है)

चूहा-2 : प्यारे भाई मेरे भाई
देखें तुम्हें क्या चीज़ मिली है।

(चूहा-3 उसे हड्डी से मारता है। चूहा-2 गिर पड़ता है।)

चूहा-3 : देखा तुमने देखा तुमने
देखा तुमने छोटे चूहे
कितने तुम हो कमज़ोर चूहे
कितने मज़बूर हो तुम चूहे

(और भी चूहे आ जाते हैं और सब चूहा-2 को घेर कर खड़े हो जाते हैं।)

चूहा-3 : देखो तुम सब ध्यान से सुन लो
आंखें खोलो कान से सुन लो
जब भी वह बिल्ला आएगा
उससे मैं लड़ने जाऊंगा
तुम सब मेरे पीछे रहोगे
कहना मेरा मानोगे तुम
बात न मेरी टालोगे तुम
मुझको नेता मानोगे तुम
मुझको स्वामी मानोगे तुम
मुझको रक्षक मानोगे तुम।

चूहा-1 : मेरे भाई बात सुनो तुम
हम सब चूहे भाई भाई हैं

(चूहा-3 बढ़कर उसे हड्डी मारता है वह गिर जाता है।)

चूहा-3 : जो मैं तुमसे कहता हूं
उस पर तुम सब अमल करो
जाओ जाकर जंगल में
एक महल तैयार करो
उसमें अब मैं रहा करूंगा
तुम सब पहरा दिया करोगे।

दृश्य : 7

(जंगल में ही चूहे-3 का दरबार लगा हुआ है। वह अपने सिंहासन पर बैठा है। सामने पंक्ति में हाथ बांधे चूहे खड़े हैं। दो चूहे पीछे खड़े चूहा-3 को पंखे झल रहे हैं। चूहा-3 चमकीले, महंगे कपड़े पहने हैं।)

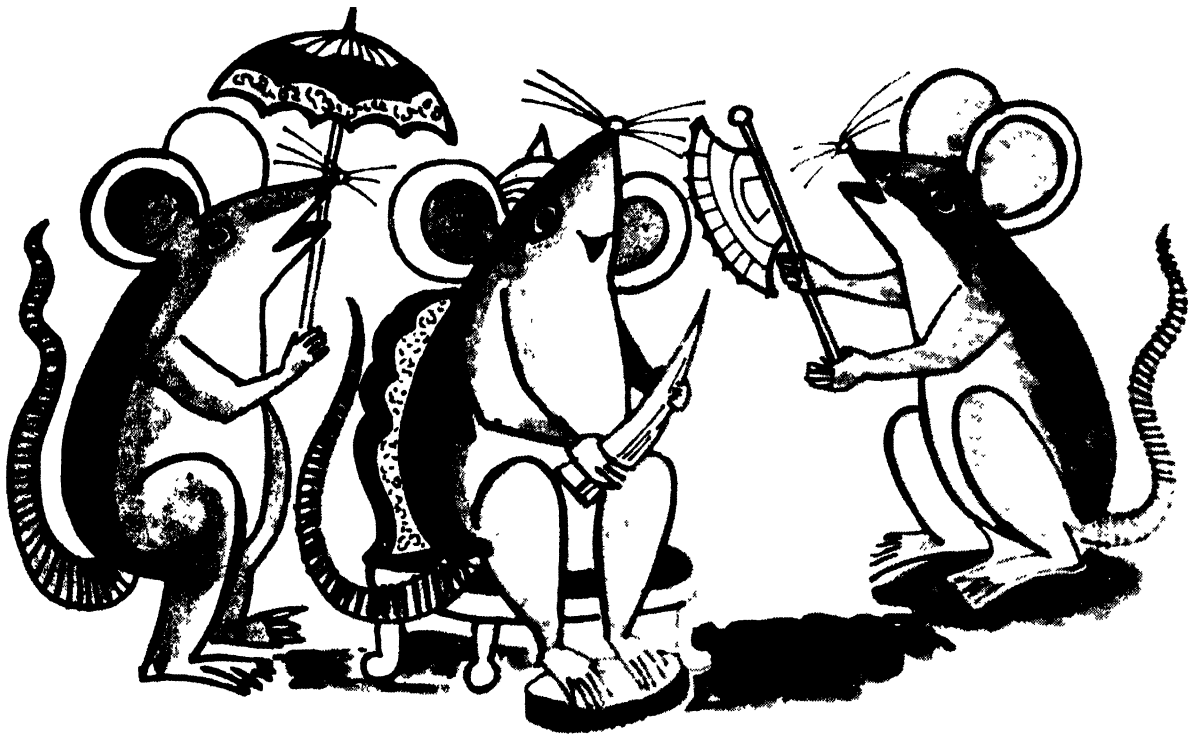

(चूहा-1 से)

चूहा-3 : तुमसे मैंने कल ही कहा था
काम तुम्हारा है फल लाना
आज सुबह कहां गए थे
फल चट करके भाग गए थे।
नहीं नहीं मालिक सरकार

चूहा-1 : नहीं नहीं अब मार पड़ेगी

चूहा-3 : तभी ये सारी तुमको मान पड़ेगी।

(चूहा-4 से)

चूहा-3 : चलो इसे तुम मारो खूब

चूहा-4 : मैं इसको क्यों मारूं भाई

चूहा-3 : अगर नहीं तुम बात सुनोगे
अगर नहीं तुम इसे धुनोगे
तो मैं तुमको इस हड्डी से
मार मार के ख़त्म करूंगा।

(चूहा-4 उठकर चूहा-1 को मारने लगता है)

चूहा-3 : तुम सब इसको ठीक से समझो
मैं राजा हूं मैं स्वामी हूं मैं मालिक हूं
जो भी तुमको हुक्म सुनाऊं
उसको फौरन पूरा करो तुम
तुम जाओ जूते चमकाओ
तुम जाओ खाना पकवाओ
तुम जाओ पानी भर लाओ
तुम जाओ कपड़े धो लाओ
तुम जाओ पहरेदारी पर
तुम अब मेरा बदन दबाओ
तुम सब मेरे नौकर हो
अब तुम सब मेरे नौकर हो।

दृश्य : 8

(रात का दृश्य जंगल में चूहे बहुत उदास और परेशान बैठे हैं। कुछ कराह रहे हैं। कुछ रो रहे हैं। कुछ चूहे लेटे हुए हैं। कुछ पेड़ों के सहारे बैठे हैं। दूर से घुंघरू की आवाज़ आती है। परी चूहों के पास आती है। चूहे उठ कर खड़े हो जाते हैं और परी को घेर लेते हैं और मिल कर गाते हैं।)

कितना अच्छा जीवन था
कितना अच्छा जंगल था
कितना प्यार था हम सब में
कितने अच्छे बीते दिन थे

अब हम दुख में डूब गए हैं
अब हम दिन दिन खटते हैं
रातों में सब रोते हैं
दिन में सब मेहनत करते हैं
एक दूसरे का दुश्मन हैं
एक जूता एक का सिर है।

परी हमें समझाओ कुछ
कैसे अब हम राह निकालें
कैसे अपने कदम बढ़ाएं
कैसे अपनी रात बिताएं
कैसे अपने दिन काटें

परी देखो प्यारे चूहो देखो
एक तुम्हारा साथी तुमको
करता है कितना हैरान
लेकिन सोचो मिल कर सोचो
राह कोई निकलेगी सोचो
बात बनेगी मिल कर सोचो
दुख में घुलने से अच्छा है
मिलकर सोचो राह निकाल

(चूहे सिर जोड़े मिल कर बैठ जाते हैं परी नाचती हुई चली जाती है।)

दृश्य : 9

(चूहे का दरबार लगा हुआ है।)

चूहा-1 : हुज़ूर सुना है हम सबने
बिल्लों की एक फौज बड़ी सी
हम पर हमला आज करेगी

चूहा-3 : तुम लोग नहीं घबराओ बिल्कुल
मैं अपने हथियार को लेकर
उनको मार भगाऊंगा
तुम सब मेरे पीछे रहना
जैसा मैं कहता जाऊंगा
वैसा करते जाना तुम सब।

चूहा-1 ठीक बात है ये सरकार
लेकिन बात सुनें सरकार
बहुत सालों से हथियार आपका
वैसे का वैसा ही धरा है
उसको हम सब साफ करेंगे
उसको हम चमका देंगे
फिर जब बिल्ले हमला करेंगे
अपनी मौत आप मरेंगे।

चूहा-3 : ठीक है लेकिन तुम हथियार
धीरे धीरे साफ करो
नोक को उसकी तेज करो
मैं जाता हूं सोने अब
तुम सब मिल कर काम करो।

(चूहा-3 अपना हथियार देकर चला जाता है)

सब चूहे : रगड़ो रगड़ो इतना रगड़ो
इतना रगड़ो इतना रगड़ो
इतना रगड़ो इतना रगड़ो

जिससे यह पूरा हथियार
टुकड़े टुकड़े टुकड़े होकर
बिल्कुल ही बेकार हो जाए।

(सब चूहे मिलकर हथियार पत्थरों पर रगड़ते हैं और वह छोटे-छोटे टुकड़ों में बदल जाता है। चूहा-3 आता है।)

चूहा-3 : कहां गया मेरा हथियार?
साफ किया मेरा हथियार?

चूहा-1 : साफ किया इतना चमकाया
इतना चमकाया इतना चमकाया

(हाथ में हथियार का छोटा सा टुकड़ा लेकर उसे दिखाता है)

लेकिन फिर ये टूट गया
टुकड़े टुकड़े टूट गया।

(चूहा-3 गुस्से में पागल हो जाता है। वह चूहा-1 की तरफ झपटता है, पर चूहा-1 उसे धक्का देता है। वह गिर जाता है। फिर चूहा-3 दूसरे चूहों की तरफ बढ़ता है। वे सब उसे धकियाते हैं। अंततः चूहा-3 पागल-सा हो जाता है। अपने ही बाल नोचने लगता है। दूसरे चूहे हंसते हैं और मिलकर गाते हैं तथा चूहा-3 पागलपन में अपना सिर पटकता और बाल नोचता रहता है।)

चित्र : विवेक

चूहों का कोरस

नौकर मालिक कोई नहीं
सेवक स्वामी कोई नहीं
तेरा, मेरा कोई नहीं
सब सबका है, सब सबका है

जब भूख लगे तब खाते हैं
जब नींद लगे तब सोते हैं
जब आंख खुले तब उठते हैं
जब जी चाहे तब गाते हैं।

□ असग़र वजाहत

हवालीराम

■ कुत्ता जीभ से पानी क्यों पीता है? घोड़ा, गाय-भैंस जैसे जानवर जीभ से पानी क्यों नहीं पीते हैं?

—मोहनदास बागरे, छिंदगांव (तमोली) होशंगाबाद

☐ तुमने पढ़ा होगा या सुना होगा कि हजारों साल पहले के प्राणियों और आज के प्राणियों में कई अंतर पाए जाते हैं। पहले सभी प्राणी अपने-अपने ढंग से ज़मीन या पानी पर रहते थे। जिसको जो भोजन मिला, वह खा लिया। जैसे-तैसे एक दूसरे से रक्षा करके ज़िंदा रहते थे। पर धीरे-धीरे ये बातें बदलने लगीं। तुम्हारे सवाल का उत्तर भी इसी 'बदलने' वाली बात में है।

बदलते-बदलते कुछ प्राणी मांसाहारी, शिकारी जानवर और कुछ शाकाहारी, पालतू जानवर बन गए। इन्हीं मांसाहारी शिकारी जानवरों में से कुत्ता भी एक है। जो जीभ से पानी को मुंह में उछाल कर पीता है।

मांसाहारी जानवर शिकार को पंजों और मुंह की मदद से पकड़ते हैं। मुंह से शिकार पकड़ने और उसको खाने के लिए ज़रूरी है कि इनके दांत आसानी से शिकार को पकड़ सकें। इसलिए ऐसे जानवरों के जबड़े चौड़े और होंठ पतले होते हैं। इस कारण दांत का उपयोग पकड़ने और चबाने में आसानी से हो जाता है।

हम लोग होठों की मदद से बोलने, पीने आदि का काम करते हैं। हमारे होंठ मोटे और इतने बड़े होते है कि हम उन्हें मोड़कर नली जैसा बना लेते हैं।

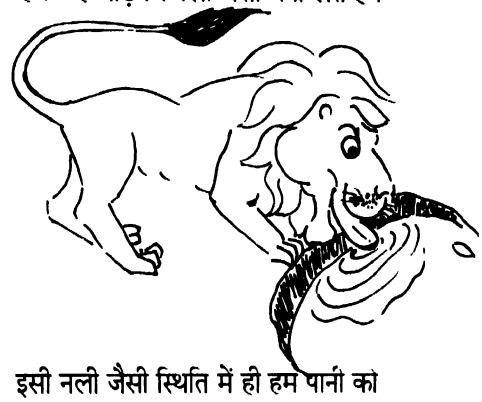

इसी नली जैसी स्थिति में ही हम पानी को अंदर खींच पाते हैं। यदि तुमसे कहा जाए कि हथेलियों में पानी लेकर बिना होंठों की मदद के पीओ। तो क्या आसानी से पानी पी सकोगे, करके देखो।

अतः जिन जानवरों के होंठ पतले और जबड़े चौड़े होते हैं, वे हमारी तरह होठों की मदद से पानी नहीं पी सकते हैं। इसलिए मांसाहारी, शिकारी जानवर जीभ से पानी को मुंह में उछाल कर पी पाते हैं। ●

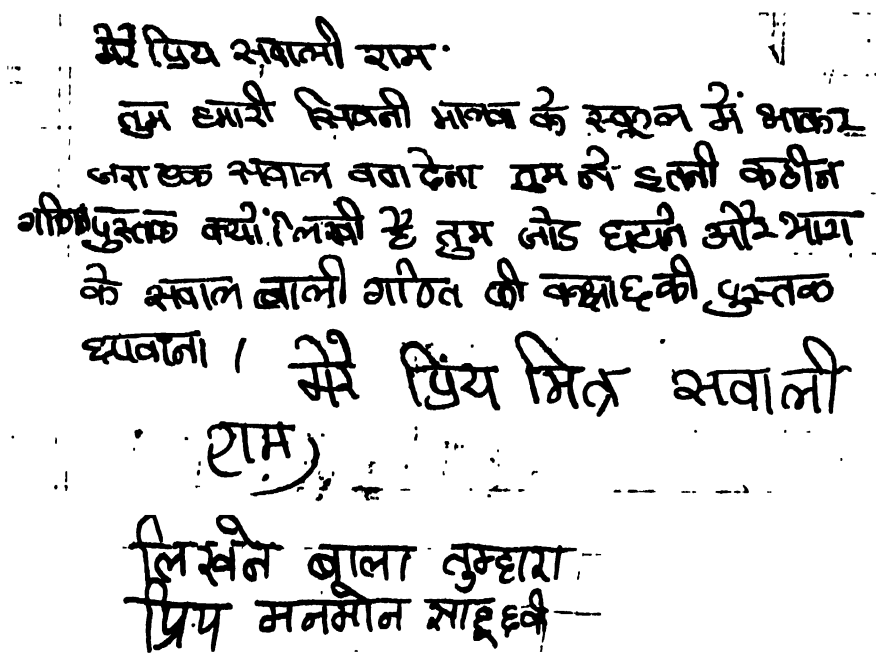

मोमबत्ती के साथ कुछ प्रयोग

यदि तुम एक जलती हुई मोमबत्ती को लेकर किसी कमरे में प्रवेश करो तो मोमबत्ती की लौ किस दिशा में झुकेगी? तुम्हारी ही तरफ ना!

अब एक छोटा प्रयोग करो। जलती मोमबत्ती को चारों ओर से ढक लो ताकि लौ को हवा न लगे। अब मोमबत्ती को लेकर आगे बढ़ो। क्या इस बार भी लौ तुम्हारी तरफ झुकी? या सीधी ही रही? यदि ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि लौ इस बार विपरीत दिशा में यानी आगे की तरफ झुकती है। हां, ज्यादा नहीं, पर झुकती ज़रूर है।

क्या कारण है इसके पीछे? कारण यह है कि लौ अपने आसपास की हवा से हल्की है यानी कम घनी है। हमारे चलने पर लौ और उसके आसपास की हवा को धक्का लगता है। और हवा से कम घनी होने के कारण, लौ, धक्के के कारण हवा से तेज़ चलती है यानी आगे की तरफ झुक जाती है। मोमबत्ती की लौ ऊपर की तरफ जाती है। पर ऐसा क्यों होता है? लौ किसी एक दिशा में क्यों नहीं झुक जाती। वास्तव में इसका कारण पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति है जो हवा के बहाव को प्रभावित करती है।

एक ऐसी स्थिति की कल्पना करो जहां गुरूत्वाकर्षण शक्ति नहीं है, या गुरूत्वाकर्षण शून्य है। जैसा कि अंतरिक्ष यानों में होता है। इस स्थिति में लौ किस दिशा में झुकेगी? वास्तव में इस स्थिति में क्या होगा यह कहना मुश्किल है। लौ की गर्मी आसानी से प्रसारित नहीं होती है। इसलिए लौ गोल गेंद जैसा आकार ले लेती है। जब जलने से उत्पन्न पदार्थ इस गेंद की सतह पर जम जाते हैं तो लौ अपने आप बुझ जाती है।

कुछ वैज्ञानिकों ने लौ को नियंत्रित करने के प्रयोग किए हैं। इसके लिए उन्होंने विद्युत का उपयोग किया। अवलोकन में यह पाया गया कि जब गुरूत्वाकर्षण सामान्य और विद्युत शक्ति शून्य हो तो लौ पतली और लंबी हो जाती है। इसके विपरीत गुरूत्वाकर्षण शून्य हो पर विद्युत शक्ति अधिक हो तो लौ विद्युत की तरफ झुकेगी। गुरूत्वाकर्षण तथा विद्युत के क्षेत्र को बदल-बदल कर उन्होंने लौ की भिन्न-भिन्न आकृतियां प्राप्त कीं, जिनके बहने की दिशा भी भिन्न थी। निष्कर्ष यह निकलता है कि विद्युत से लौ को नियंत्रित करना संभव है। यदि लौ से हम किसी वस्तु को गर्म करना चाहते हैं तो विद्युत की सहायता से लौ को उस वस्तु पर केंद्रित किया जा सकता

मोमबत्ती बुझाओ तो जानें!

एक जलती मोमबत्ती पर ज़ोर से फूंक मारो। लौ बुझ जाएगी। अब एक प्लास्टिक फनल लो। फनल का चौड़ा हिस्सा मोमबत्ती की तरफ रखो और नली से फूंको। क्या मोमबत्ती बुझ जाती है? नहीं, ना! फनल को मोमबत्ती के थोड़ा नज़दीक लाकर दुबारा कोशिश करो। हमारा कहना है मोमबत्ती अब भी नहीं बुझेगी।

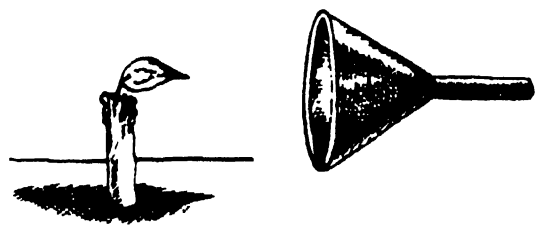

पर इसमें एक नई बात तुम देख सकते हो। लौ तुम्हारी विपरीत दिशा में जाने के बजाए तुम्हारी तरफ झुकने लगती है। ऐसा क्यों होता है?

जब हम फनल में फूंकते हैं, तो हवा का बहाव फनल के संकरे हिस्से की सीध में नहीं होता है। हवा फनल की भीतरी सतह पर फैलकर आगे बढ़ती है। इससे भंवर जैसा बहाव बनता है। भंवर के भीतर हवा कम घनी होती है। इस कम घनी जगह में बाहर से हवा अंदर आने लगती है। इसी बहाव के कारण लौ तुम्हारी ओर झुकती है। (ऐसा ही एक प्रयोग चकमक के दिसंबर 85 अंक में दिया था। याद करो।)

यदि फनल से फूंककर लौ को बुझाना है तो फनल के कोन की सतह लौ के पास रखो। इससे फूंक की हवा लौ पर पड़ेगी और उसे बुझा देगी।

किसकी चमक ज्यादा!

आसमान में तारों की चमक (रोशनी) पास रखी जलती मोमबत्ती की चमक से कम लगती है। पर यह तो हम जानते ही हैं कि तारों की रोशनी मोमबत्ती की रोशनी से कई गुना अधिक है। चमक कम इसलिए लगती है क्योंकि तारे दूर हैं और मोमबत्ती नज़दीक।

दूरी के कारण दो समान मोमबत्तियों की चमक में भी अंतर दिखाई देता है। यदि एक मोमबत्ती तुमसे 5 मीटर दूर स्थित है और दूसरी 10 मीटर दूर तो पास वाली मोमबत्ती की रोशनी अधिक लगती है।

अब मान लो तुम 10 मीटर दूरी पर उतनी ही चमक उत्पन्न करना चाहते हो जितनी 5 मीटर दूरी पर दिखती है। तो तुम्हें वहां कितनी मोमबत्तियां जलानी पड़ेंगी? दो..जी नहीं! तुम्हें चार मोमबत्तियों की ज़रूरत होगी। यानी जब दूरी दुगनी हो तो चमक चार गुना (2×2) अधिक चाहिए होगी। इसी तरह यदि दूरी 15 मीटर (तीन गुना) है तब चमक नौ गुना (3×3) चाहिए होगी। इस नियम के आधार पर तुम दो मोमबत्तियों, दियों या टार्चों की रोशनी की तुलना कर सकते हो। मोमबत्ती और टार्च की रोशनी की तुलना भी संभव है।

मान लो तुम्हें एक मोमबत्ती और एक लैम्प (चिमनी) की रोशनी की तुलना करना है। दोनों को चित्रानुसार ज़मीन पर दीवार से कुछ दूरी पर रखो। अब एक सफेद कार्डशीट का टुकड़ा किताबों के सहारे या बिना किताबों के दीवार के पास खड़ा करो। शीट के सामने एक लकड़ी का टुकड़ा या पेंसिल खड़ी करो। शीट पर पेंसिल की दो छाया दिखेंगी, एक मोमबत्ती के कारण और दूसरी लैम्प के कारण। मोमबत्ती से उत्पन्न छाया हल्की होगी।

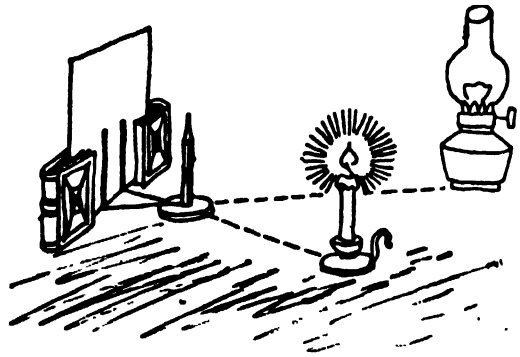

अब मोमबत्ती को आगे (या लैम्प को पीछे) सरकाओ। तुम देखोगे कि मोमबत्ती से बनने वाली छाया पहले की अपेक्षा अधिक घनी हो जाती है। मोमबत्ती को तब तक आगे सरकाओ जब तक कि दोनों स्रोतों से बनने वाली छाया समान गहराई की न दिखने लगें। इस स्थिति में कार्डशीट पर मोमबत्ती तथा लैम्प की चमक बराबर होगी।

अब मोमबत्ती और कार्डशीट के बीच की दूरी तथा लैम्प और कार्डशीट के बीच की दूरी नापो। दूरी के अंतर से (और पहले बताए नियम के आधार पर) तुम मोमबत्ती तथा लैम्प की चमक की तुलना कर सकते हो। उदाहरण के लिए, यदि कार्डशीट से लैम्प की दूरी, मोमबत्ती की दूरी से दुगनी है तो इसका मतलब है कि लैम्प की चमक मोमबत्ती से चार गुना अधिक है।

अलग नज़र : अलग रंग

मंजू एक कमरे में बैठी थी और अंजू बाहर बगीचे में। कुछ समय बाद उनकी एक सहेली वहां आई। अंजू से मिलकर वह मंजू से मिलने के लिए कमरे में चली गई। मंजू से मिलकर जब वह चली गई तो दोनों कुछ इस तरह बात करने लगीं।

अंजू ने कहा, "आज रीता ने क्या खूब कुर्ता पहना था। नीला रंग बहुत सुंदर था।"

"नीला?" मंजू ने चौंक कर कहा, "वह तो बैंगनी रंग का कुर्ता पहने थी।"

"नहीं, नहीं, वह तो नीला था," अंजू ने कहा। "मैंने अपनी आंखों से देखा है।"

"तुम्हारी आंखों में ज़रुर कुछ गड़बड़ है, डाक्टर को दिखाना। वह तो बैंगनी कुर्ता पहनकर आई थी।" मंजू ने कहा।

अब कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ? क्या दोनों मित्रों में से किसी एक की आंख सचमुच खराब थी?

हमारे हिसाब से दोनों सच बोल रही थीं और दोनों की आंखें सही सलामत थीं।

अब तुम ही बताओ एक वास्तविकता दोनों की नज़रों में अलग-अलग क्यों दिखी? इसके पीछे क्या वैज्ञानिक आधार हो सकता है?

तितली और बिस्तुइया

एक बार छत में चिपकी थी
बिस्तुइया हत्यारी,
उड़कर ठीक वहीं जा पहुंची
तितली भी बेचारी।

बिस्तुइया झपटी तितली पर
जैसे बड़ी शिकारी,
निकल गई पर उसके मुंह से
बचकर तितली प्यारी।

देख रहा था मैं कमरे में
बैठा मुंह ऊपर कर,
काल सामने था तितली के,
पर मेरे मन में डर।

बिस्तुइया झपटी तितली पर
कई बार रुक-रुककर,
पर तितली बच गई न जाने
कैसे इधर-उधर कर।

आखिर एक बार जब झपटी
बिस्तुइया झुंझलाकर,
पैर छूटे, छत से नीचे आ
चट से गिरी धरा पर।

कुर्सी छोड़-छाड़ उठ भागा
मैं कमरे से बाहर;
लेकिन मन हलका था मेरा
तितली के बचने पर।

थोड़ी देर बाद जब आया
तितली वहां नहीं थी;
मरी मरी-सी बिस्तुइया ही
भू पर रेंग रही थी।

☐ निरंकार देव सेवक

('बालसखा' से साभार)

दिव्यज्ञान

बेचारा भोला शुरू से ही मंद बुद्धि रहा है इसलिए उसे सभी बुद्धु कहते हैं।

घर में उसके माता-पिता उसे बुद्धु कहकर उपेक्षा करते, स्कूल में मास्टर जी और लड़के भी उसे इसी नाम से चिढ़ाते रहते। भोला चुपचाप सबकी उपेक्षा भरी बातें सुन लेता।

एक दिन उसने किसी पत्रिका में पढ़ा कि, अंगूठा चूसने वाले बच्चे होनहार व बुद्धिमान होते हैं। बस फिर क्या था। भोला ने सोचा अब उसे दिव्यज्ञान प्राप्त हो गया है। उसने अंगूठा चूसना शुरू कर दिया।

घर आया तब मां ने उसे अंगूठा चूसते देखकर पूछा, "अरे, यह अंगूठा मुंह में क्यों लिया है?"

भोला मां की तरफ देखकर हंसने लगा। उसे हंसते देखकर मां चिढ़ गई। अब की बार वह लगभग चीखती हुई बोली, "मैं पूछती हूं यह अंगूठा मुंह में क्यों लिया है?" भोला और भी जोर से हंसने लगा।

मां ने तड़ाक की आवाज़ के साथ एक चांटा भोला के गाल पर रसीद कर दिया और आंखें निकालकर कहने लगी, "कुछ सुनता ही नहीं, मैं पूछती हूं यह नई आदत कहां से सीखकर आया है? अरे, कुछ सुधरेगा भी या प्रतिदिन अधिक मूर्ख होता जाएगा?"

भोला ने बाएं हाथ से अपने आंसू पोंछते हुए कहा, "आज मुझे बुद्धि आ गई है। तभी तो अंगूठा चूस रहा हूं। इसी से तो लोग ज्ञानी बनते हैं।"

"बस, बस! आ गई बुद्धि। निकाल मुंह से अंगूठा। क्या सुना अंगूठा निकाल वरना हड्डी-पसली एक कर दूंगी।"

"ऊं हूं, मैं नहीं निकालूंगा मुंह से अंगूठा। मुझे बुद्धिमान बनना है। जब मुझे बुद्धि नहीं आई थी तो सब कोई बुद्धु कह कर मुझसे घृणा करते थे। आज जब बुद्धि का स्रोत हाथ लगा तब मारती है।" भोला ने फिर अंगूठा मुंह में ले लिया। लगा चसर-चसर चूसने।

मां ने आंखें तरेरकर कहा, "ढीट कहीं का। आने दे तेरे पिताजी को। जब वे मारेंगे तब भूल जाएगा सब।"

भोला पिता की मार के डर से शाम को बिना खाए ही सो गया। पर सोते समय मुंह में अंगूठा लेना नहीं भूला।

मां जब स्वयं खाने बैठी तो उसे भोला का ख्याल आया। बेचारा, बिना खाए ही सो गया। जगा कर देखूं। खा ले तो अच्छा है। भोला की मां ने जगाना चाहा, लेकिन वह नहीं उठा। तब मां ने उसके मुंह से अंगूठा निकालकर बाहर कर दिया।

सवेरे भोला ने उठकर देखा उसका अंगूठा मुंह से बाहर है, तो वह सोचने लगा - वास्तव में, मैं बुद्धु ही हूं। बुद्धि का स्रोत मिल गया, फिर भी उस पर अमल नहीं कर पा रहा हूं। इतना सोचना था कि भोला का अंगूठा फिर उसके मुंह में चला गया।

भोला ने अपना नित्यकर्म किया और अंगूठा चूसता हुआ मां के पास जाकर कहने लगा, "मुझे नाश्ता दो। रात में भी खाना नहीं खाया था। बड़े ज़ोर की भूख लगी है।" इतना कहकर उसने फिर अंगूठा मुंह में ले लिया।

"अभी दे रही हूं। जरा दूध गरम कर लूं। पर यह क्या रे? फिर अंगूठा चूसने लगा? पहले मुंह स अंगूठा निकाल, तब नाश्ता मिलेगा।"

भोला ने सोचा—खाते वक्त तो अंगूठा मुंह से बाहर ही रहेगा। मां की बात ही मान ली जाए तो अच्छा है। वरना पिटाई होगी। नाश्ता भी नहीं मिलेगा। यही सोचकर भोला ने मुंह से अंगूठा बाहर निकालकर कहा, "यह लो अंगूठा मुंह से बाहर निकाल लिया है। अब तो नाश्ता दो।"

मां ने खुश होते हुए कहा, "यह हुई ना बात। यह ले दूध रोटी। खाकर पढ़ने बैठ जा, अच्छे लड़के मां का कहना मानते हैं।"

भोला ने दूधरोटी खाते वक्त सोचा—मैंने सिर्फ रात भर ही अंगूठा चूसा था कि मां को मैं अच्छा लड़का दिखाई देने लगा। यदि मैं हर वक्त ही अंगूठा चूसता रहूंगा तो मेरी गिनती वास्तव में बुद्धिमान लड़कों में होने लगेगी। फिर मुझे कोई बुद्धु नहीं कहेगा।

उसने खाना खाया और फिर अंगूठा मुंह में ले लिया। इसी तरह अंगूठा चूसते हुए अपना पाठ याद करने लगा।

भोला के पिताजी सवेरे उठे तो उन्हें सिगरेट की तलब लगी, लेकिन सिगरेट का पाकिट तो खाली था। उन्होंने भोला को आवाज़ लगाई, "अरे ओ भोला जरा दो सिगरेट तो लाकर दे।"

"अभी आया", कहता हुआ भोला अपने बाएं हाथ के अंगूठे को चूसता हुआ पिताजी के सामने खड़ा हो गया।

उसके पिताजी ने आश्चर्य से पूछा, "भोला अंगूठा मुंह में क्यों लिया है। तेरी बुद्धि में पत्थर पड़ गए हैं क्या? निकाल अंगूठा बाहर।"

भोला पिताजी की तरफ कनखियों से देखकर मुस्कराता हुआ अंगूठा दिखाकर बोला, "यह तो बुद्धि का

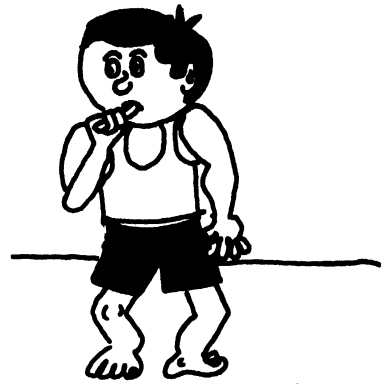

स्रोत है। इसे तो होनहार लड़के ही चूसते हैं।'

"क्या? मुझे अंगूठा दिखा रहा है?" तड़ाक-तड़ाक, दो तमाचे जड़ दिए उसके पिताजी ने। उनकी आंखें क्रोध उगल रहीं थीं।

बेचारे भोला का अंगूठा तुरंत मुंह से बाहर आ गया और हाथ से बाएं गाल को सहलाने लगा। उसकी समझ में यह नहीं आया कि उसके पिताजी ने उसे क्यों मारा?

भोला प्रश्न सूचक निगाहों से उन्हें घूरने लगा। उसके पिताजी कड़ककर बोले, "मेरा मुंह क्या देख रहा है, जा सिगरेट लेकर आ।"

भोला ने पैसे लिए और सिगरेट लाने चला गया। उसने मन में निर्णय कर लिया था कि अब तो वह बुद्धिमान बन कर ही दिखाएगा। इसके लिए उसे चाहे कितनी ही मार क्यों न खानी पड़े।

सिगरेट पिताजी के हाथ में थमाकर उसने घड़ी पर नज़र डाली। देखा तो साढ़े नौ बज रहे थे। वह जल्दी-जल्दी तैयार होकर स्कूल जाने के लिए घर से निकल गया।

बाहर जाकर इधर-उधर देखा। बस्ता पीछे लगाया और बाएं हाथ का अंगूठा फिर मुंह में ले लिया। इसी तरह स्कूल में चला गया।

उसे अंगूठा चूसते देखकर लड़के हंसने लगे। एक लड़के ने कहा, "अरे देखो आज बुद्धुराम का नया तमाशा-अंगूठा चूस रहा है।

दूसरे ने कहा, "लगता है, इसकी मां ने इसे खाना नहीं दिया!"

तीसरे ने कहा, "बेचारा भोला अंगूठा चूसकर अपनी भूख मिटा रहा है।"

चौथे ने पूछ ही लिया, "क्यों बे, आज तेरी मां ने खाने को नहीं दिया क्या?"

भोला अपना अंगूठा बाहर निकाल कर हंसते हुए

कहने लगा, "इस अंगूठे में दिव्यज्ञान भरा पड़ा है। जो इसे चूसते रहते हैं वे ही बुद्धिमान होते हैं।"

उसकी बात सुनकर सब लड़के ठहाका मारकर हंसने लगे।

इतने में टन..टन करती हुई स्कूल की घंटी लग गई। सब लड़के प्रार्थना करने के लिए लाइन में खड़े हो गए। भोला भी अपने स्थान पर अंगूठा मुंह में लिए खड़ा हो गया।

प्रार्थना के बाद सब के साथ भोला भी कक्षा में जाकर बैठ गया। मास्टर साहब अपना पीरियड लेने के लिए आए। सबने खड़े होकर नमस्कार किया। लेकिन भोला चुपचाप अपना अंगूठा चूसता रहा। यह देखकर मास्टर साहब आग बबूला होकर कहने लगे, "भोला, कक्षा में यह क्या बदतमीजी लगा रखी है! मुंह में अंगूठा लेकर चूसते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती? अंगूठा मुंह से निकालो!"

भोला ने बड़े दृढ़ शब्दों में कहा, "जी मैं इसे बाहर नहीं निकाल सकता।"

"क्या कहा?" मास्टर साहब दहाड़े।

"मैं इसे बाहर नहीं निकाल सकता।" भोला ने बड़े इत्मीनान से अंगूठा दिखाकर फिर मुंह में ले लिया।

सब लड़के उसकी इस मूर्खतापूर्ण हरकत को देखकर ज़ोर से हंस पड़े।

मास्टरजी क्रोध से तिलमिला गए। हालांकि हंसी तो उन्हें भी आ रही थी। पर वे अपनी हंसी पर काबू रखकर कहने लगे, "तुम्हारी इतनी हिम्मत? यह मेरे हाथ में क्या देख रहे हो?"

मास्टरजी के हाथ में मोटा-सा डंडा देखकर भोला डर गया। फिर भी साहस करके बोला, "मास्टरजी, बात ऐसी है कि मैं अब बुद्धिमान बनने की कोशिश करने लगा हूं। ताकि आप मुझे बुद्धु कहकर नहीं पुकार सकें।"

"तो क्या इस तरह अंगूठा चूसकर कोई बुद्धिमान बन जाता है? वह तो निरा बेवकूफ ही नज़र आता है। बकवास बंद करो और मुंह से अंगूठा बाहर निकालो।"

"मैंने कल एक किताब में पढ़ा था कि जो बच्चे अंगूठा चूसते हैं वे होनहार व बुद्धिमान होते हैं।"

"हूं तो यह बात है। पर मूर्खानंद तुम्हें यह नहीं मालूम कि बच्चों का अंगूठा चूसना जन्म से लेकर छह माह तक ही शुभ माना जाता है। तुम्हारे जितने बड़े बच्चे का नहीं, समझे!"

मास्टरजी ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरते हुए फिर कहना शुरू किया, "उपरोक्त कहावत नवजात शिशु के लिए कही गई है। अब तुम अपना अंगूठा मुंह से बाहर निकालो और अपने स्थान पर बैठ जाओ। आज तो छोड़ देता हूं। आगे से फिर कभी ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकत की तो इसी डंडे से बात करूंगा, समझे!"

भोला ने बड़े भोलेपन से कहा, "मास्टरजी हो सकता है मैंने बचपन में अंगूठा नहीं चूसा था। इसी कारण से मेरे अंदर बुद्धि की कमी रह गई है। यदि अब मैं इसे पूरे एक साल तक चूसता रहूंगा तो बुद्धिमान बन जाऊं?" उसकी बातों को सुनकर कक्षा में लड़कों की हंसी गूंजने लगी। मास्टरजी भी अपनी हंसी को नहीं रोक सके। वे हंसते हुए कक्षा से बाहर चले गए।

बेचारा भोला यह भी नहीं समझ पाया कि सब क्यों हंस रहे हैं? वह अंगूठा चूसता हुआ सबकी ओर बारी-बारी से ताकने लगा।

☐ **कांता देवी शर्मा**

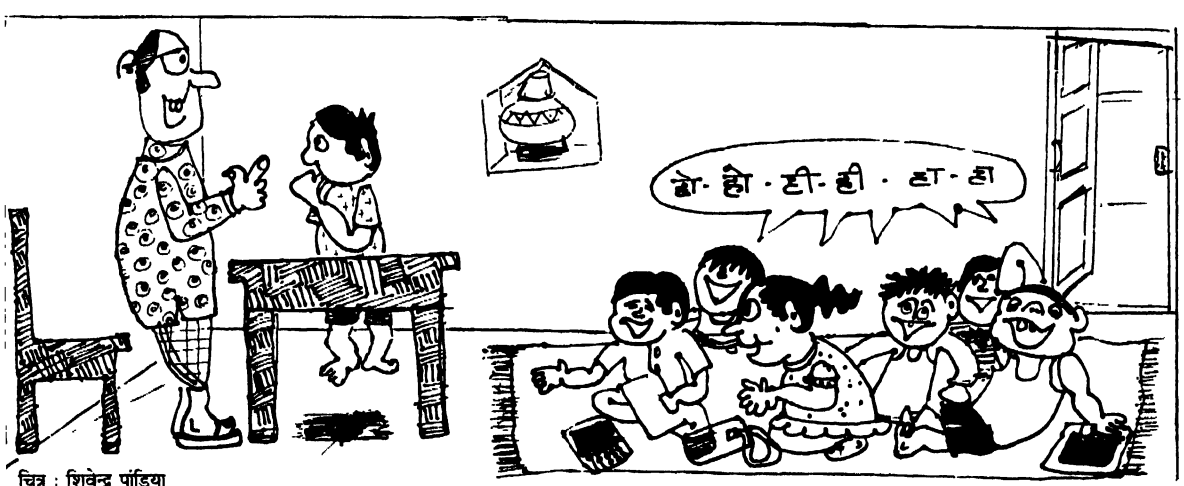

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

माथापच्ची

जब्बार ने अपनी जेब से माचिस की डिबिया निकालकर तीलियों को मेज पर बिछाया। उसने तीलियों को तीन असमान ढेरों में बांटा।

अब उसने पहले ढेर से उतनी तीलियां निकालीं जितनी दूसरे ढेर में थीं। उसने इन तीलियों को दूसरे ढेर में मिला दिया। दूसरे ढेर से उसने उतनी ही तीलियां निकालीं जितनी तीसरे ढेर में थीं और उन्हें तीसरे ढेर में मिला दिया। अब उसने तीसरे ढेर से उतनी तीलियां निकालीं जितनी की पहले ढेर में बची थीं और उन्हें पहले ढेर में ही मिला दिया।

अब तीनों ढेरों की तीलियों की संख्या बराबर थी। यदि कुल मिलाकर 48 तीलियां हैं तो बताओ कि शुरुआत में प्रत्येक ढेर में कितनी तीलियां थीं?

(2)

इस ट्रेक्टर के कौन से पहिए जल्दी घिसेंगे और क्यों?

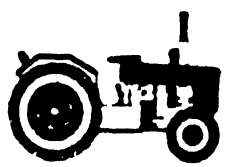

(3)

एक वयस्क और एक बच्चा सर्दी के मौसम में एक जैसे कपड़े पहनकर सड़क पर खड़े हैं किसको अधिक ठंड लगेगी?

(4)

सड़क पर ग्यारहवीं कक्षा के गणित विषय के तीन छात्र घूम रहे थे। अचानक उन्होंने देखा कि एक कार का ड्राइवर कोई दुर्घटना करके भाग गया। कार का नंबर जो चार अंकों का था किसी को याद न रहा, पर चूंकि तीनों छात्र गणितज्ञ थे, उनमें से प्रत्येक ने कार के नंबर की एक-एक विशेषता देख ली थी। एक छात्र को याद आया कि प्रथम दो अंक एक जैसे थे। दूसरे ने याद किया कि अंतिम दो अंक भी समान थे। अंत में तीसरे ने बताया कि चार अंकों की यह संख्या एक पूर्ण वर्ग थी। क्या इन सूचनाओं के आधार पर तुम कार का नंबर बता सकते हो?

(5)

6 5 7
3 2 4
9 8 1

ऊपर 1 से 9 तक के अंकों को इस तरह जमाया गया है कि पहली पंक्ति से बनने वाली संख्या और दूसरी पंक्ति से बनने वाली संख्या का जोड़ तीसरी पंक्ति से बनने वाली संख्या के बराबर है। यानी 657 + 324 = 981। यदि इस तालिका को घड़ी की सुई की दिशा में 90° पर घुमा दिया जाए तो हमें यह जोड़ प्राप्त होगा 936 + 825 = 147। परंतु यह जोड़ पहले वाले जोड़ की तरह नहीं है।

क्या तुम इन अंकों को इस तरह जमा सकते हो कि दोनों ही स्थितियों में तीसरी पंक्ति की संख्या ऊपर की दो पंक्तियों की संख्याओं के जोड़ के बराबर हो?

(6)

यदि हम इस खोखले घन के 12 किनारों में से 7 किनारे काटकर खोलते हैं तो हमें साथ बना क्रास चिन्ह जैसा आकार (जिसमें 6 बराबर चौकोर हैं) प्राप्त होगा। यदि हम कोई और 7 किनारे काटते हैं तो प्राप्त आकार भिन्न होगा। बताओ इस तरह 7 किनारे काटकर कितने भिन्न-भिन्न आकार प्राप्त किए जा सकते हैं। प्रत्येक आकार में 6 बराबर और जुड़े हुए चौकोर होने चाहिए!

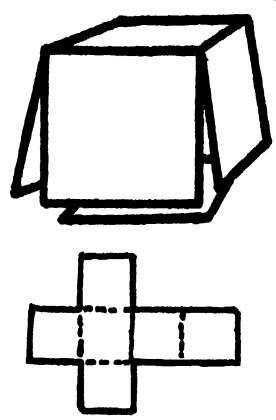

(7)

तीन दम्पति मेला देखने गोवा पहुंचे और एक होटल में ठहरे। होटल के रजिस्टर में उनके नाम तथा कमरा नंबर इस प्रकार थे-

कमरा न. 1 : मार्टिन व रिच्छा डिसिल्वा
कमरा न. 2 : गौतम व मेरी भट्टाचार्य
कमरा न. 3 : सुबीर व रीना सेन

पर किसी कारणवश तीनों दम्पति रजिस्टर में दर्शाए कमरों में नहीं थे। होटल मैनेजर इस गड़बड़ी के कारण बड़ा परेशान था। वह किसी तरह यह पता करना चाहता था कि किस कमरे में कौन दम्पति है। वह खुद कमरे में जाकर पूछने को तैयार नहीं था। उसने फोन पर बात करने का तय किया। पर शर्म के मारे वह सीधे किसी का नाम भी नहीं पूछना चाहता था। उसे मालूम था कि डिसिल्वा गोवा का निवासी है और उसकी पत्नी बंगाली। भट्टाचार्य तो बंगाली ही था पर उसकी पत्नी गोवा की थी। सेन और उसकी पत्नी दोनों ही बंगाली थे। वह आवाज़ से तो आदमी, औरत, बंगाली और गोवा वासी को पहचान सकता है।

बताओ, समस्या हल करने के लिए कितने बार फोन करना पड़ेगा, और किस-किस को?

(8)

मेरे परिवार में भाई-बहनों की संख्या बराबर है। परंतु मेरी बहन के जितने भाई हैं वे उनकी बहनों की संख्या से दुगने हैं। बताओ परिवार में कितने भाई-बहन हैं?

(9)

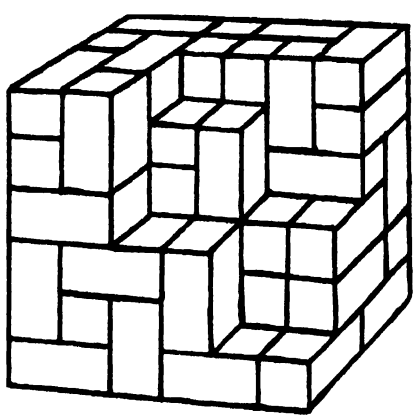

इस चित्र में एक घन दिखाया गया है जो छोटे-छोटे आयताकार गुटकों से बना है। प्रत्येक गुटके का आयतन 10×5×5 (लंबाई×चौड़ाई×ऊंचाई) सेंटीमीटर है। घन के कुछ गुटके गायब हैं। बताओ घन में कितने गुटके बचे हैं?

वर्ग पहेली- 9

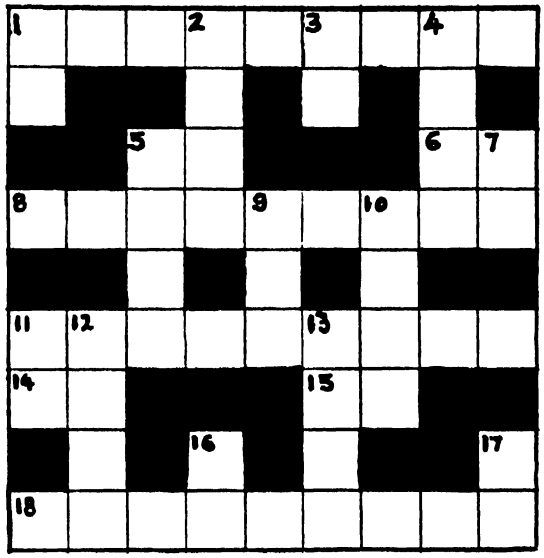

संकेत : बाएं से दाएं

1. काम को न टालने का मुहावरा (2,2,1,2,2)
5. खास गाली में अपना (2)
6. उल्टो काटो या रोका (2)
8. शिक्षक पर निछावर होने की कहावत (4,2,3)
11. मज़बूरी में अंतिम उपाय जान देना (3,2,1,3)
14. शीर्षक उल्टा मना (2)
15. दहाड़ने वाला पशु (2)
18. जहां ढूंढोगे वहां मिलेगा मुहावरा (2,2,2,3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. अंतहीन मकान उल्टा कार्य (2)
2. जरी गारे गड़बड़ चिल्लर (4)
3. खास नहीं, फल (2)
4. कान को ढकने वाली टोपी (4)
5. हाय सता गड़बड़ मदद (4)
7. शाम का कीर्तन उसमें रिश्ता (2)
9. पुतली या छोटी लड़की (3)
10. कमाई पर लगने वाला टैक्स (4)
11. गुमनाम में नहीं (2)
12. रन में मज़ा, एक उर्दू महिना (4)
13. मन नशे से पहले घोंसले के लिए (4)
16. दिमाग, प्रेषित किया (2)
17. वाम (2)

(10)

मेरे छह लड़के हैं। प्रत्येक लड़के की एक बहन है। बताओ, मेरे कुल कितने बच्चे हैं?

उत्तर : मई अंक के

3. सबसे बड़ी आकृति वृत्त है। परंतु तीलियों से वृत्त बनाना संभव नहीं है। आठ तीलियों से केवल एक अष्टभुज बना सकते हो जो कि वृत्त के नजदीक है।

4. लाल फूल प्रकाश की लाल किरणों को ही प्रतिबिंबित करता है और नीला फूल नीली किरणों को। इसलिए वे लाल और नीले ही दिखेंगे। हरा कांच केवल हरे प्रकाश को अपने में से जाने देता है और बाकी रंगों के प्रकाश को रोक लेता है। जब हम लाल फूलों को हरे रंग के कांच द्वारा देखते हैं तब फूलों के लाल रंग की किरणें आंखों तक नहीं पहुंच पाती हैं। क्योंकि कांच उनको रोक लेता है। इसलिए लाल फूल काला दिखेगा और नीला फूल भी काला। लाल फूलों को लाल कांच द्वारा देखने पर फूल सफेद दिखेंगे।

7. यदि चढ़ाव की गति एक सी है तो दोनों को बराबर मेहनत लगेगी।

8. यदि पहले भाई की ऊंचाई 'अ' सेंटीमीटर है तब
अ + अ 5 + अ 10 + अ 25 = 185 सेंटीमीटर

4 अ = 740 सेंटीमीटर
अ = 700 सेंटीमीटर
यानी उनकी ऊंचाई 175, 180, 185 तथा 200 सेंटीमीटर है।

9. चार गुना अधिक वज़नदार।

10. गुब्बारा वायुमंडल की ऊंचाई से ऊपर तक तो नहीं जाएगा। वास्तव में तो वह वायुमंडल की ऊपरी सतह पर पहुंच ही नहीं पाएगा। वह उस ऊंचाई तक ही उठ पाएगा जहां हवा इतनी हल्की (कम घनी) हो कि गुब्बारे से विस्थापित हवा का वज़न गुब्बारे के वज़न के बराबर हो। परंतु अक्सर गुब्बारा इस ऊंचाई तक भी नहीं पहुंच पाता क्योंकि यहां तक पहुंचने के पहले ही वह फूलकर (हवा के कम दाब के कारण) फट जाएगा।

(12)

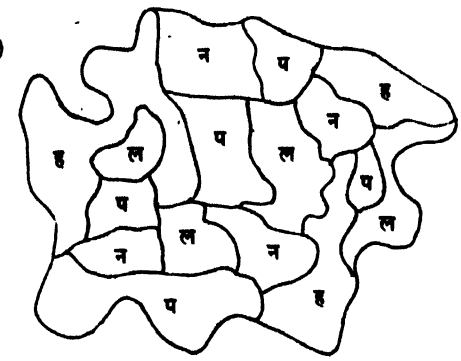

छोटा सा जमुनादास।
कपड़े पहने सौ पचास।।

□

हरा आटा।
लाल पराठा।।

□

सफेद चूहा।
हरी पूंछ।।

□ सुनील राठी, छठवीं, इटारसी

(11)

नीलिमा ने ताश के 52 पत्तों को तीन ढेरों में बांटकर उनको मेज़ पर रखा।

पहले ढेर में काले पत्तों की संख्या लाल पत्तों से तिगुनी थी। दूसरे ढेर में लाल पत्तों की संख्या काले पत्तों से तिगुनी थी। तीसरे ढेर में काले पत्तों की संख्या लाल पत्तों से दुगनी थी।

बताओ, प्रत्येक ढेर में कितने काले और कितने लाल पत्ते थे?

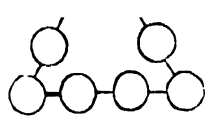

पहले त्रिभुज के वृत्तों में 1 से 9 तक के अंकों को इस तरह भरो ताकि त्रिभुज की प्रत्येक भुजा के अंकों का जोड़ 20 हो। शर्त यह है कि एक अंक को एक ही बार प्रयोग में लाना है।

अब इसी तरह त्रिभुज के वृत्तों में यही अंक भरो। पर इस बार प्रत्येक भुजा के अंकों का जोड़ 17 होना चाहिए।

(13)

0 से 9 तक के सभी अंकों को एक ही बार प्रयोग करके एक ऐसा समीकरण बनाओ जिसका उत्तर 1 हो।

वर्ग पहेली 8 : हल

1 भ	2 न	क		3 म		4 अ		5 क
	का		6 ला	ल	च	का	फ	ल
7 बा	रा	त		म		ल		म
	त		8 गै	ल	9 न		10 म	
11 का	म	गा	र		12 कु	सा	ध	य
	क		13 त	14 र	ल		य	
15 चु		16 भा		ग		17 कु	प्र	था
18 नौ	दो	र	या	र	ह		दे	
ती		य		ग		19 दे	श	क

नर्म धूप में

आंख मींचे
धूप में
जुगाली कर रही है
भैंस

दो कऊए
उसके कानों से
चुन रहे हैं
मैल

मैल मज़ेदार है
कऊओं की
लगी है मौज़
नर्म धूप में!

□ रुस्तम

चित्र आशा शर्मा

माता-पिता से सम्वाद

गिजुभाई की कलम से..

घर में बालक का स्थान क्या है?

गिजुभाई ने बच्चों के लिए साहित्य लिखने एवं संकलित करने के साथ-साथ इस ओर भी ध्यान आकर्षित किया है कि शिक्षकों तथा अभिभावकों का व्यवहार बच्चों के प्रति कैसा होना चाहिए। पिछले पांच अंकों में हमने इस स्तम्भ में ऐसी सामग्री दी है जिसमें गिजुभाई बच्चों से संबोधित हैं। पर चकमक के पाठक सिर्फ छोटे नहीं हैं बड़े भी हैं। यह तथ्य आए दिन हमारे पास पहुंचने वाले पत्रों से भी जाहिर होता है। इस बार यह स्तम्भ खासतौर पर अभिभावकों के लिए है। गिजुभाई की गुजराती में प्रकाशित पुस्तकों को हिंदी में अनूदित करके प्रकाशित करने की एक वृहद् योजना है। इस योजना का श्रेय श्री काशिनाथ त्रिवेदी जी को जाता है जो उपलब्ध सामग्री को लगातार गुजराती से अनूदित कर रहे हैं। 15 पुस्तकों की ग्रंथमाला को प्रकाशित करने का बीड़ा माण्टेसरी बाल शिक्षण समिति, राजलदेसर (राजस्थान) ने उठाया है। 6 पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत लेख 'माता-पिता से' शीर्षक पुस्तक से साभार है।

हमें उम्मीद है कि यह लेख अभिभावकों को सोचने की एक नई दिशा देगा। —सं.

घरों में रोज़ रसोई किसको पूछकर बनती है?

कितनी माताएं हैं, जो रसोई बनाते समय इस बात का विचार करती हैं कि बालक को उनकी बनाई चीज़ें रुचेंगी या नहीं? उसको वे पचेंगी या नहीं?

अगर बालक को कोई चीज़ रुचती नहीं हैं, तो हम कहते हैं कि वह खाना जानता ही कहां है? इसको स्वाद का कोई भान ही कहां है?

अगर बालक को कोई चीज़ तीखी लगती है, और वह उसको खाने से इंकार करता है, तो हम कहते हैं कि तीखी चीज़ें खाने की आदत तो उसको डालनी ही चाहिए?

हमको खारी और खट्टी चीज़ें अच्छी लगती हैं, तो हम चाहते हैं कि बालक भी खारा-खट्टा खाए? हमको भात अच्छा लगता है, तो हम भात की और शाक अच्छा लगता हो, तो शाक की हिमायत करते हैं।

बालक को हमारा हुक्म मानना ही चाहिए, क्योंकि हमारा शरीर बालक के शरीर से बड़ा है। लेकिन हमको इससे भी संतोष कहां होता है? हम तो चाहते हैं कि बालक हमारी आदतों को, हमारे शौकों को और हमारी पसंद को खुद ही अपना ले।

बालक से हमारी अपेक्षा यह रहती है कि हम जिस तरह बैठते हैं, बालक भी उसी तरह बैठना सीख ले। हम जिस तरह बोलते हैं, बालक भी उसी तरह बोले। तभी यह माना जाएगा कि हां, वह बोलना जानता है। हम जो खाते हैं, अगर बालक उसको न खाए, तो कैसे माना जाए कि बालक खाना जानता है?

हम चाहते हैं कि जैसे हम हैं, हमारे बालक भी वैसे ही बनें। हमने खुद ही तय कर दिया है कि बालकों के लिए हमारा आदर्श पर्याप्त है। क्या कभी हम यह सोचते हैं कि हमारे बालक हम से भी ऊंची रुचि, वृत्ति और शक्ति वाले बन सकते हैं?

क्या हम इस इतिहास को जानते हैं कि अपने पूर्वजों की तुलना में हम किन-किन बातों में आगे बढ़े हैं?

दुनिया आगे बढ़ती है या पीछे हटती है? हमारे दिलों में हमारे अपने बच्चों की बातों के लिए कितनी जगह है? अगर हमारे बालक को विदेशी के बदले देशी कपड़े पहनने हों, तो क्या हमारा अर्थशास्त्र उसमें बाधक नहीं बनता? क्या हम अपनी स्वार्थपूर्ण दृष्टि को भूल पाते हैं? यह बात सच है या झूठ—हम अपने बालकों को अवसर ही नहीं देते कि वे नए युग की नई कल्पना को अपना सकें।

कई बालकों को सिर पर टोपी पहनना और पैरों में जूते पहनना अच्छा नहीं लगता। लेकिन इसका क्या उपाय है कि अगर बेटा टोपी नहीं पहनता और नंगे पैरों घूमता है, तो बाप की आबरू चली जाती है?

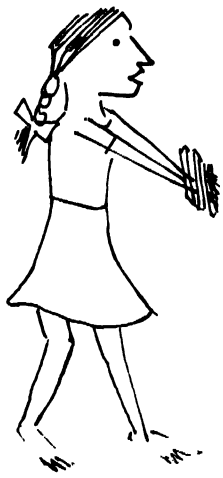

जहां बाप चाहेगा, कुरते की जेब वहीं तो लगेगी न? इस मामले में बालक की सुविधा का ध्यान कैसे रखा जाए?

लड़की की घाघरी और उसके पोलके के प्रकार का निश्चय तो उसकी मां को ही करना चाहिए न? इस बात को मानता ही कौन है कि बालक में भी पसंद करने की अपनी शक्ति होती है? अपने बचपन में हम कौन से अपनी पसंद की चीज़ें पहन पाते थे? चूंकि उन दिनों हम गुलाम रहे, इसलिए आज हमारे बालकों को भी हमारी उस गुलामी का प्रायश्चित तो करना ही चाहिए न?

अनुभवी माता ही इस बात का निर्णय करती है कि उसके बालक को किस समय, किस दिन, कैसे कपड़े पहनने चाहिए? जो मां की आंखों को अच्छा लगता है, वही सबको सुहाता है। यदि बालक ने बारात के या सभा के लायक कपड़े न पहने हों, तो आबरू तो माता की ही जाती है न? छोटे बच्चों की अपनी प्रतिष्ठा ही क्या है?

बालक तो मां-बापों की अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के साधन जो ठहरे!

बालक तो मां-बापों के दंभ और अभिमान को संतुष्ट करने के उपकरण-भर हैं!

बूढ़ी मां खुद जिस चीज़ को पहन नहीं पाती, उसको वह अपने बालक पर लादती है। भला, जब मां शोक में डूबी हो, उस समय उसके बालक मौज कैसे मना सकते हैं?

बालकों की अपनी बिसात ही कितनी? भला, उनको रंग का क्या खयाल हो? वे बेचारे कला को क्या समझें? सौन्दर्य को वे क्या जानें? वे तो अपने मां-बाप के बड़े-बड़े गुड्डा-गुड्डी हैं। मां-बाप अपनी इच्छा के अनुसार अपने बच्चों को सजाते-सिंगारते हैं, और उनको देख-देखकर वे खुश होते हैं। वे उनको खेलाते हैं और खिलाते हैं। यह सब भी उन्हीं बालकों को नसीब होता है, जिनके मां-बाप बहुत अच्छे माने जाते हैं।

बालक बहुत चाहते हैं कि वे नंगे रह कर ही खेलें-कूदें। लेकिन उस हालत में हमारे अपने शिष्टाचार का क्या हो? मां-बाप खुद शिष्टाचार की गुलामी से छूट कर ही तो अपने बालकों को उससे छुड़ा सकते हैं न?

भले ही गरमी पड़ रही हो और शरीर से पसीना बहने लगा हो, फिर भी बालक को कपड़े तो पहनने ही होंगे। भले ही बालक के शरीर को घूमने-फिरने की आज़ादी न मिल पाए पर कपड़े तो उसको पहनने ही होंगे। नंगा बालक कितना बुरा लगता है? बालक के सुंदर शरीर को नकली कपड़ों से ढंकने के बाद ही हम को संतोष होता है, और तभी हमारी कलारसिकता का दिवाला भी निकलता है।

लेकिन बालक तो एक सामाजिक प्राणी भी है न? समाज के सारे नियम तो उसको जान ही लेने चाहिए? अगर उसने बचपन से कपड़े पहनना न सीखा, और अपनी बड़ी उमर में वह नंगा रहने लगा, तो सोचिए कि वह कैसा लगेगा?

बालक कुदरत का बच्चा है। खुली हवा और उगते सूरज की धूप, ये दोनों उसके दोस्त हैं। बालक को धरती की गोद अपनी मां की प्यारी गोद से भी अधिक प्यारी लगती है। धरती तो बालक की मां की भी मां है न?

लेकिन अगर बालक को खुली हवा में घूमने-फिरने देंगे, तो उसको सरदी न हो जाएगी? सूरज की धूप लगने से कहीं बालक को बुखार तो नहीं आ जाएगा? बालक ज़मीन पर चले-फिरेगा, तो उसके कपड़े गंदे होंगे और शरीर भी गंदा होगा। यह है, हमारे सोचने का ढंग!

सोने से बिछौना गंदा होता है, इसलिए बिछौने पर सोना नहीं है। खेलने से कपड़े गंदे होते हैं, इसलिए खेलना भी

नहीं है! यह है, हमारा न्याय! हमारे अपने लिए एक नियम, बालकों के लिए दूसरा नियम।

अगर कोई किसी बच्चे से पूछे, 'बेटा! तुम खेलना चाहते हो, या अपने कपड़ों की रखवाली करना चाहते हो?' तो सोचिए कि कैसा मुंह पर तमाचा लगने-जैसा जवाब मिलेगा!

प्रकृति का साथ और सहवास बालक में जीवन का संचार करता है। किसी को पता भी है कि पृथ्वी के सीधे स्पर्श में बालक का कितना और कैसा-कैसा आनंद छिपा है?

बालक को खुले रहकर खेलना कितना अच्छा लगता है, इसको तो आप तभी समझ सकेंगे, जब बालक आपके आगे-आगे दौड़े और आप उसके पीछे-पीछे दौड़ें।

किसी को कोई अंदाज है कि बालक की दृष्टि में सृष्टि का सारा जीवन ही चमत्कारों से भरा-पूरा है?

धरती की निर्दोष धूल बालक को हमारे चंदन से भी अधिक प्यारी लगती है।

हवा की मीठी लहरें बालक को हमारे वासना-पूरित चुम्बन से कहीं अधिक प्यारी लगती हैं।

उगते सूरज की कोमल किरणें बालक को हमारे खुरदरे हाथों से अधिक मुलायम लगती हैं।

जहां हमको कुछ नहीं दिखाई देता, वहां बालक को चमत्कार दिखाई देता है।

छोटे-से पतिंगे को देखकर बालक पागल बन जाता है। पतिंगे के साथ वह खुद भी पतिंगा बन जाता है। मेंढक को देखकर वह उछलने और कूदने लगता है। घोड़े को देखकर वह हिनहिनाने लगता है, और गाय को देखकर वह उसको टिटकारने लगता है!

घास का एक छोटा-सा तिनका बालक के लिए एक बड़ी संग्रहणीय चीज़ बन जाता है।

कभी आप अपने बालक की जेब टटोलेंगे, तो उसमें आपको घास के तिनके, फूल और पत्तियां ठूंसी हुई मिलेंगी।

प्रकृति के साथ समरस हुए बिना बालक प्रकृति के रहस्यों को कैसे समझ सकेगा?

चांद की चांदनी, नन्हीं-सी नदी, खेतों की मिट्टी, बाड़ी के घर, टेकरी के कंकर, खुले मैदान की हवा और आसमान के रंग, ये सब वे उपहार हैं, जो बालक को प्रकृति से प्राप्त हुए

इन सबका भरपूर उपयोग करते रहने से हम बालक को क्यों रोकें?

यदि बालकों को खुले आसमान के नीचे और खुली धरती पर दिन-रात रखा जाए, तो वे कभी घर के अंदर आने की बात न करें।

फूल तो बालक के जिगरी दोस्त होते हैं। उनको देखकर तो बालक पागल हो उठता है। फूलों को दूर से देखते ही उसकी नाक अपना काम शुरू कर देती है। उसके चेहरे पर एक चमक आ जाती है। उसके दांतों की कलियां खिल उठती हैं। उसके गालों पर दो नन्हें गड्ढे उभर आते हैं।

बालक फूल पर मुग्ध हो उठता है, उसी तरह, जिस तरह मां अपने बालक पर मुग्ध हो उठती है।

पहले बालक प्रकृति की मिठास को समझता है, और बाद में वह हमारी मिठास को समझ पाता है।

नीचे धूल में लोटकर जब बालक ऊपर आसमान की ओर ताकता है, तो उस समय वह क्या करता है?

उस समय वह सारी प्रकृति को पी रहा होता है। वह सारी सृष्टि पर छा जाना चाहता है।

चांद बालक को नित नया आनंद देता है।

चांद रात ही में दिखाई देता है, इसलिए बालक बराबर सोचता रहता है कि दिन में चांद कहां छिप जाता होगा? शायद लुका-छिपी का अपना खेल बालकों ने चांद ही से सीखा होगा!

घी-चुपड़ी रोटी का अर्थ हम तो मनचाहा करते हैं। यह तो लोक-साहित्य के आचार्यों का काम ठहरा। अपने रोते हुए बालक को चुप करने के लिए हम भले ही उसके साथ

घी-चुपड़ी रोटी का खेल खेल लें, लेकिन बालक तो यही समझता होगा कि उसको चांद की चांदनी खिलाई जा रही है!

भला, चांद का उजाला और उसकी शीतलता किसको अच्छी न लगती होगी? बालक का आनंद तो चांद का रंग देखने में है। चांद की चांदनी में नहा लेने में है। चांद के उजाले को अपनी आंखों में भर लेने में है।

इस बात को बालक तुरंत ही मान लेता है कि चांद पर एक हरिण और एक बुढ़िया बैठी है। यह बालक का भोलापन नहीं, यह तो उसका पागलपन है। प्रकृति के साथ बालक का कुछ ऐसा ही लगाव रहता है। बालक के दिमाग को विज्ञान की कर्कशता अच्छी नहीं लगती। यही कारण है कि बालकों को परियों की कथाएं प्यारी लगती हैं। अद्‌भुतता ही बालकों का स्वभाव है, और इस अद्‌भुतता में ही उनका आनंद समाया रहता है।

लेकिन हमको इतनी फुरसत ही कहां के हम अपने बालक के साथ चांद की चांदनी में घूमने निकलें?

क्या हमको चांदनी पर कविता नहीं लिखनी है? क्या हमको हरिण और बुढ़िया की लोक-कथा के मूल की खोज नहीं करनी है? क्या हम को इस बात का पता नहीं लगाना है कि चंद्रमा में जीते-जागते प्राणी रहते हैं या नहीं?

किंतु इन सब कामों के लिए आज फुरसत किसके पास है?

मनुष्य सच्चा कवि कैसे बने?

मनुष्य चित्रकला में चमत्कार के दर्शन किस तरह करें?

प्रकृति को पीए बिना मनुष्य प्रकृति को चित्रित कैसे करे? वह उसका गान कैसे गाए? वह उस पर कविता कैसे लिखे?

क्या बिना भोजन के भी पेट कभी भरता है?

अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर हम उसको क्या बनाएंगे? देव या दानव?

अब मैं फिर वही प्रश्न पूछता हूं : 'घर में बालक का स्थान क्या है?'

अपने लिए किराए का घर पसंद करते समय हम इस बात का विचार नहीं करते कि घर में बच्चों के लिए कोई जगह है या नहीं? हां, हम मकान-मालिक से यह ज़रूर पूछते हैं कि घर में मोरी है या नहीं? रसोईघर में उजाला है या नहीं? सोने के कमरे में हवा आती है या नहीं? नहाने के लिए नल और पेशाब-पाखाने के लिए संडास है या नहीं? गादियों और रजाइयों को धूप दिखाने के लिए ऊपर छत है या नहीं? लेकिन क्या अभी तक किसी ने यह पूछा है या घर के अंदर जाकर इस बात का पता लगाया है कि घर में बालकों के लिए खेलने की जगह है या नहीं? भला, किराए पर घर लेते समय हमको अपने बालक क्यों याद आने लगे? बालकों के लिए अलग जगह की ज़रूरत ही क्या है? हमको तो यह विचार ही नया और अनोखा लगता है।

बालकों के समान छोटे-छोटे प्राणियों के लिए आज ही

से अलग हक की बात कैसी? उनके लिए आज ही से यह सारी खटपट क्यों? यह सारा घर उन्हीं का तो है। इसमें रहकर वे खाएं, पीएं और मौज मनाएं। इस सारे घर में घूमने, फिरने और खेलने से उनको रोकता ही कौन है?

लेकिन बालक गाएं कहां?

वे बात कहां करें?

वे खेल कहां खेलें?

वे नाचना-कूदना चाहें, तो नाचें और कूदें कहां?

वे रसोईघर में जाते हैं, तो वहां मां को परेशानी होती है। मां की सारी व्यवस्था ही गड़बड़ा जाती है? रसोईघर गंदा हो जाता है। अगर मां पूजा-पाठ में लगी हों, तो उसमें रुकावट पैदा होती है।

बालक दीवानखाने में जाते हैं, तो वहां पिताजी अखबार पढ़ते होते हैं, या अपने मुवक्किलों के लिए केस तैयार करने में लगे होते हैं, या गांव में होने वाले अपने भाषण की टिप्पणियां लिखते होते हैं। भला, वहां बालकों को गड़बड़ करने की इजाज़त कौन दे?

उधर बरामदे में बड़े भैया और बड़ी बहन, दोनों अपना-अपना सबक तैयार करने में लगे हैं। भला, बालक वहां कैसे जाएं, कैसे खेलें और कैसे गाएं?

इस तरह अपने घर के अंदर बालक जहां भी जाते हैं, वहां से उनको खाली लौटना पड़ता है।

कहीं भूले-भटके बालकों को एक तरफ घर का कोई कोना मिल भी गया, तो वहां उनको अपनी कल्पना दौड़ाकर या तो गुड्डा-गुड्डी का खेल खेलना होता है, या झूठमूठ की रसोई बनाने और झूठमूठ ही खाने का खेल खेलना पड़ता है।

लेकिन ज़रा सोचिए कि इस तरह हमारे बालकों की कल्पना-शक्ति का सही-सही विकास कैसे हो सकता है?

अपने घरों में हमारे लिए और हमारे मेहमानों के लिए मेज होती है, कुरसी होती है, चटाई होती है, और जाजम आदि चीज़ें बिछी रहती हैं। लेकिन क्या अपने उसी घर में हम अपने बालकों के लिए टाट का कोई टुकड़ा भी संभाल कर रखते हैं?

यदि हमारे बालकों से उनके दोस्त मिलने आएं, तो वे उनको कहां बैठाएं?

लेकिन हम यह जानने का प्रयत्न ही कब करते है कि छोटे बालकों के भी अपने दोस्त होते हैं?

दोस्त तो हमारे ही हो सकते हैं। भला, हमारे छोटे बालक दोस्त में और दोस्ती में फर्क क्या समझें? पर हमारी दोस्ती तो स्वार्थवाली होती है, जबकि बालकों की दोस्ती निर्दोष होती है।

हमारे पास अपने गहने और कपड़े रखने के लिए आलमारियां, ट्रंक और संदूकें होती हैं। लेकिन हमारे बालक अपने शंख और अपनी सीपें कहां रखें?

क्या हमारे घरों में हमारे ही बालकों के द्वारा इकट्ठा किए गए पंखों को और उनके गुड्डा-गुड्डी के कपड़ों को रखने की भी कोई जगह कहीं होती है?

हमारी कोई चीज़ चोरी चली जाए, तो बालक का ध्यान उस ओर नहीं जाता। लेकिन अगर कोई उसके द्वारा इकट्ठा किए गए पंख और फूटी कौड़ियां ले जाए तो वह क्या सोचेगा? वह तो यही मानेगा कि उसका तो सारा राज ही चला गया। फिर भी अपने बालक के ऐसे कीमती संग्रह को संभाल कर रखने के लिए हम उसको एक पेटी या डिब्बा तक नहीं देते। अपने बालक के साथ हमारा यह कैसा अजब व्यवहार है?

असल में आज हमारे घरों में बालक की परवाह ही कौन करता है?

हमारे घरों में ऐसी खूंटियां कहां हैं कि जिन तक बालक के अपने हाथ पहुंच सकें? ऐसे टांड कहां हैं? ऐसी आलमारियां कहां हैं? हमारे घरों में टांगी गई बढ़िया-बढ़िया तस्वीरें बहुत ऊंचाई पर टंगी होती हैं। उनकी तरफ हमारा अपना ध्यान ही बहुत कम जा पाता है। ऐसी स्थिति में बालकों के लिए उनका क्या उपयोग रह जाता है?

अपने बालक के कपड़े हम टांगते हैं।

ऊपर रखे हुए लोटे-गिलास उतार कर हम उनको देते हैं।

बड़े-बड़े पट्टे या आसन हम बिछाते हैं।

थालियां भी हम लगाते हैं।

बालक बेचारा क्या करे? इन सब बड़ी-बड़ी चीज़ों को वह कैसे उठाए? कैसे पकड़े? बालक चाहता तो बहुत है कि अपने सारे काम वह खुद ही करे, पर कर नहीं पाता। कैसे कर पाए?

हम तो यह मानते हैं कि हमारा बालक अपने काम खुद ही कर लेने के लायक नहीं है, इसलिए उसके सारे काम हमको कर देने चाहिए। अपने बालकों को चाहने वाले माता-पिता ये सारे काम करके यह मान लेते हैं कि वे अपने बालकों को बहुत सुखी बना रहे हैं।

अपने बालक के महत्व को समझने का दावा करने वाले माता-पिता मानते हैं कि अपने बालकों के लिए वे जो कुछ भी करते हैं, सो सब उनकी पूजा करने और उनको सम्मानित करने के विचार से ही करते हैं। लेकिन असल में ये सब लोग अपने बालक को पल-पल में अपंग बनाते रहते हैं, और उसको अपना गुलाम बना लेते हैं। हम जिसके गुलाम बनते हैं, वह हमारा बड़ा गुलाम बन जाता है।

क्या हम अपने बालक पर विश्वास करते हैं? उसके काम के बरतन उसको उठाने देते हैं? किसी को भोजन परोसने के मौके हम उसको कभी देते हैं? क्या हम उसको दीया-बत्ती करने देते हैं? क्या हम कभी उसको चूल्हा सुलगाने का काम सौंपते हैं? उसके छोटे-छोटे रूमाल और कपड़े हम उसको धोने देते है?

हम तो कहते हैं कि बालक ये सारे काम खुद कर नहीं सकता। हम मानते हैं कि उसमें व्यवस्था करने की शक्ति ही नहीं होती। लेकिन हमारे पास बालक को देखने-समझने लायक आंख ही कहां है?

अज्ञान के घने अंधकार ने हमको चारों ओर से घेर रखा

अपने बालक पर विश्वास करके क्या हमने उसको कभी कोई काम करने का अवसर दिया?

बालक के बदले हम कभी खाते-पीते नहीं। बालक के बदले हम कभी चलते-फिरते नहीं। बालक के बदले हम कभी खेलते-कूदते भी नहीं।

लेकिन हम अपने बालक के बदले उसके बरतन मांज दिया करते हैं। उसको कपड़े भी हम ही पहनाते हैं। भोजन के समय उसके लिए पाटा भी हम ही बिछा देते हैं।

अगर कोई हमको हमारे लायक सारे काम करने से रोक दे तो हमको उसका यह व्यवहार कैसा लगेगा? उस स्थिति में हमारी हालत गुलाम की होगी या मालिक की?

क्या ऐसा मालिकपन हम पसंद करेंगे?

यह मालिकपन होगा या मुर्दापन?

असल में, बालक तो सब कुछ कर सकते हैं। वे अपने छोटे-छोटे बरतन खुद मांज सकते हैं। छोटे झाड़ू से वे कमरे की सफाई कर सकते हैं। वे अपनी छोटी बहन को झूले में झुला सकते हैं।

लेकिन ये सारी बातें हमको सूझती कहां हैं?

यदि बालक को हम अपने घरों में उचित स्थान दें तो हमारी इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग के राज्य ही स्थापना हो जाए।

स्वर्ग बालक के सुख में है।

स्वर्ग बालक के स्वास्थ्य में है।

स्वर्ग बालक की प्रसन्नता में है।

स्वर्ग बालक की निर्दोष मस्ती में है।

स्वर्ग बालक के गाने में और गुनगुनाने में है!

मानव की कहानी

बंदर से दोस्ती

तांबे के युग वाला वह मुन्ना बड़ा चालाक निकला

जंगल में बंदर पकड़ने के लिए लड़कों ने फंदा लगा रखा था। फंदा बड़ा था और उसके बीच में छोटा-सा गड्ढा खोदकर उसमें बहुत-सा दाना डाल रखा था। रस्सी के फंदे का छोर बहुत दूर ले जाकर मुन्ना और उसके साथी बैठे हुए थे, आड़ में। बंदर आते, दाने को देखते, फिर हट जाते उनके पास बोली नहीं थी, नहीं तो कहते—हमारे ही वंश के आदमी हमको निरा बुद्धू समझते हैं। लड़के सारे दिन अगोरते रहे, लेकिन कोई बुद्धू बंदर फंदे में नहीं फंसा।

मुन्नू उदास नहीं हुआ। वह दूसरे दिन भी वहां गया और दो फंदे लगा दिए। सवेरे के बैठे दोपहर तक पहुंच गए। पहले दिन बंदरों का बड़ा मुखिया उछलकर डरा देता। कोई बंदर पास नहीं आता। आज एक और भारी बंदर कहीं से आया। वह लड़ने के लिए ही आया था। फिर क्या, लड़ाई कहो या कुश्ती हो गई। दोनों एक-दूसरे को काटते, नाखून से नोचते। दूसरे बंदर और बच्चे घबराए और दूर हट गए। बड़ा बंदर अपनों को भी बुरी तरह से पीटता था, इसलिए कोई उसे पसंद नहीं करता था।

इधर लड़ाई छिड़ी थी और उधर धीरे से दो बंदर बच्चे फंदे के पास चले गए। उन्हें चारा बहुत पसंद आया। हाथ डाल ही तो दिया। मुन्ने ने दोनों फंदों की रस्सी एक ही बार खींची। पर, थोड़ी देर हो गई। एक छोटे बच्चे का हाथ फंस गया। दूसरा भाग गया। मुन्ना चिल्लाया। बंदरों को उन्होंने मार भगाया। किसी ने कहा, उस बंदर के बच्चे को भूनकर खा जाएं। उस ज़माने में सभी लोग बंदर भी खा जाते थे।

मुन्ना रोने लगा। उसने बंदर के बच्चे को गोद में छिपा लिया। बच्चा बच गया। मुन्ना उसे अपनी बकरी का दूध पिलाता। दाना खिलाता। दो-चार दिन बच्चा डरता रहा। फिर गोदी में आ गया। मुन्ने ने उसे कई बातें सिखलाईं। वह कुछ महीने बाद दोनों पैरों से चलने लगा। अब कंधे पर लाठी लेकर चलता।

वह मुन्ने को ही मानता था। दूसरे लड़के पास आते तो दांत किटकिटाता। कान पीछे की ओर ले जाता और मुंह-हाथ हिलाकर घुड़कता। छोटे बच्चे उससे बहुत डरते। मुन्ना किसी लड़के की ओर हाथ दिखाकर पकड़ने को कहता, तो बंदर जाकर लड़के के कंधे पर हाथ रख लेता। बच्चा समझता, मुझे खाने आया है। पर वह बंदर किसी को न काटता। मुन्ना बहुत छोटा नहीं, दस बरस का था। जब बाहर निकलता तो बंदर मुन्ने के कंधे पर बैठ जाता, और मुन्ने के बालों में से जूं निकालकर खाता। उस समय लोग बाल बहुत ही कम बनाते। नहाने का भी शौक नहीं था। इसलिए सबके बालों में बहुत जूं पड़ी रहतीं। बंदर दोनों हाथों से इतनी जल्दी-जल्दी जूं निकाल के मुंह में डालता कि कुछ न पूछो।

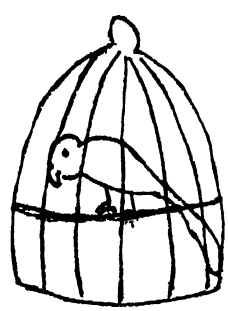

मैं तोता हूं!

मुन्ने की छोटी बहन मुन्नी थी न। वह अपने भैया को बहुत-बहुत प्यार करती थी। मुन्ने के बंदर को देख उसका मन भी ललचाने लगा। मुन्ना कहता, 'ले ले न इसीको।' पर मुन्नी डरती भी थी। एक दिन उसने एक पेड़ पर तोते के बच्चे देखे। तोती कहीं गई हुई थी। बस, मुन्नी एक बच्चा उठा लाई। उसको छोटे-छोटे कीड़े खिलाने लगी। एक सुंदर पिंजड़ा बनाकर उसमें रख दिया। मुन्नी उससे बात करती, 'मीठा फल खाओ। भूख लगी है?'

तीन-चार महीने बात करते हो गए। बच्चे के खूब बाल निकल आए। अम्मा ने कह दिया, 'बाहर न निकालना, नहीं

तो भाग जाएगा।' मुन्नी ने पूछा, 'क्यों भाग जाएगा? मैं कित्ता अच्छा खाना देती हूं, मीठे फल ढूंढ़कर लाती हूं।'

अम्मा ने कहा, 'इसकी भी तो अम्मा है। वह अपनी अम्मा के पास भाग जाएगा।' इसलिए मुन्नी प्यार तो खूब करती, पर तोते को पिंजरे से बाहर न निकालती।

एक दिन देखा, तोता कह रहा है, 'भूख लगी है, आम लाओ, केला लाओ।' यह सुनकर मुन्नी को बड़ा अचरज हुआ। तोते का बच्चा हमारी तरह की बोली बोलता है। उसके गांव में यह पहला तोता पाला गया था। शायद इसी मुन्नी ने पहले पाला या दूसरी ने। पहले आदमी जानता ही था कि तोता भी आदमी की बोली बोल सकता है। मुन्नी अपने तोते को और मुन्ना अपने बंदर को लेकर बाहर निकलते।

एक दिन दो औरतें झगड़ा कर रही थीं। मुन्नी देखने लगी खड़ी होकर। तोते के पिंजड़े को धरती पर रख दिया। मुन्नी घर चली आई। रात को तोते चुप रहते हैं। सवेरे बाहर पेड़ों पर चिड़िया चहचहाने लगीं। कौए का तो रूप भी बुरा है और बोली भी 'कांउ-कांउ' कित्ती भद्दी है! पर दूसरी प्यारी-प्यारी चिड़िया भी बहुतेरी हैं। तोते को बड़े सवेरे ही मुन्नी ने मीठा फल दे दिया। खाकर वह भी चिड़ियों की बोली में बोलने लगा। पर, वह तो आदमी की बोली बोल रहा था। और क्या बोला, झगड़े की बोली, 'तू मर जा, जा। नहीं मैं क्यों मरूंगी, तू मर जा, तुझे कुत्ते-स्यार खा जाएं।' और क्या-क्या बोलता रहा। जब प्रसन्न होता तो कहता, 'मुन्नी जी, क्या करती हो? खाना खा रही हो? खाना लाओ, मीठा पानी पीओ। मुन्नी जी, मुझे भूख लगी-है।' पर उसको भूख नहीं लगी थी। वह बोलने के लिए कह ही रहा था।

मुन्नी बुढ़िया हो गई, उसकी बेटी भी बुढ़िया हो गई, पर तोता वैसा ही रहा। तोते बहुत दिनों तक जीते हैं। मुन्नी ने अपनी नातिन की बेटी से कहा, 'मैं छोटी-सी थी तब इस तोते को पाला था।' अब तो तोता और भी ज्यादा बोलता था।

कैसे तोते होते हैं, आदमी की तरह भी बोलते हैं!

चील से हवाई जहाज़ तक

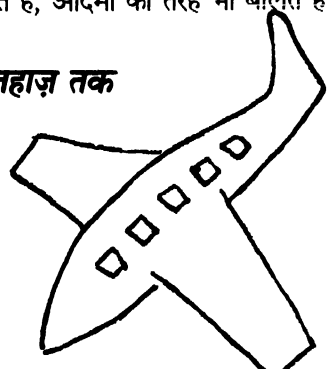

और पीछे एक मुन्ना हुआ। अभी तांबा ही चलता था।

मुन्ने ने देखा, एक बड़ी चील आकाश में उड़ रही है। वह पंख भी बिना हिलाए जा रही थी। मुन्ने ने कहा, 'अम्मा, मैं भी चील की तरह उड़ना चाहता हूं।' पास में खड़ी मुन्नी ने कहा, 'चील बन जाओ ना!'

मुन्ना बोला, 'चील कैसे बनूं? मैं चील बन जाता, पर कैसे बनूं?' मुन्नी बोली, 'तब तुम उड़ नहीं सकते।' मुन्ना सोच रहा था—मैं तो सपने में उड़ता हूं। वैसे क्यों नहीं उड़ सकता? अम्मा ने समझाकर कहा, 'नहीं बेटे, आदमी नहीं उड़ता, मछली भी नहीं उड़ती। कछुआ, केकड़े भी नहीं उड़ते। सिंह और हाथी भी नहीं उड़ते।' छोटा-सा बेचारा मुन्ना था। वह बहुत दुखी हुआ। पानी में वह तैरने लगा था। उसने कहा, 'अम्मा, हम मछली जैसे कहां हैं पर पानी में तैर लेते हैं।' अम्मा ने बहुत समझाया, पर मुन्ना रोता ही रहा। मुन्नी ने पूछा, 'अम्मा, क्या चिड़िया ही उड़ सकती हैं और कोई नहीं?' 'उड़ने वाले वे ही होते हैं जिनकी चोंच होती हैं। बस चमगादड़ ही एक दांतवाला जानवर है, जो चमड़े के पंखों से उड़ता है।' तो मुन्ना बोल उठा, 'हम भी चमड़े के पंख लगा लेंगे।' अम्मा मुन्ने के मुंह पर चुम्मी देते बोली, 'पंख चिपकाए थोड़े ही जाते हैं! वह तो जनमते ही उगते हैं।' मुन्ने को बहुत दुख हुआ कि मैं उड़ नहीं सकता। उसने अपनी एक मौसी से भी पूछा। उसने भी कह दिया कि आदमी नहीं उड़ सकता, कभी नहीं उड़ा और न कभी उड़ेगा। क्योंकि उसके पास पंख नहीं होते। उसके दांत भी हैं। मुन्ना सोचने लगा—जो हमारे दांत चोंच हो जाते और पंख भी उग जाते तो कितना अच्छा होता!

मुन्ना जब बड़ा हो गया, तब वह भी कहने लगा, 'आदमी नहीं उड़ सकता।' फिर नया मुन्ना आया। उसने अपने को सपने में उड़ता हुआ देखा। चिड़ियों को भी उड़ते देखा। उसे भी उड़ने का लालच आ गया। सभी मुन्ने उड़ने के लिए रोते चले गए।

पापा जब बच्चे थे तो मोटर भी पैदा नहीं हुई थी। हवाई जहाज़ की तो बात ही क्या। पर आज के तो मुन्ने-मुन्नी भी उड़ रहे हैं और कित्ता तेज़। कोई चिड़िया इतनी तेज़ उड़ान नहीं कर सकती। जिन्होंने हवाई जहाज़ बनाया, उन्होंने पहले बहुत पढ़ा। रात-रात टेबुल (पहाड़ा) याद करते रहे। लोहा बना, फिर उससे भी कड़ा लोहा बनाया। पहले गुब्बारे पर उड़े, फिर हवाई जहाज़ बना दिया। अब हम कित्ते आराम से हवाई जहाज़ में चलते हैं, इत्ता आराम न मोटर में रहता न रेल में।

(समाप्त)

□ राहुल सांकृत्यायन

गेछो बाबा

ऊधो—क्योंजी, खोज पाए?

गोबरा—भाई, तुम्हारी बातों को सुनकर महीनों से वन में घूमते-घूमते हालत खराब हो गई, लेकिन उनका तो चिह्न तक नहीं मिला।

पंचू—किसको खोज रहे हो?

गोबरा—गेछो बाबा को।

पंचू—गेछो बाबा? ये कौन हैं?

ऊधो—उनको तुम नहीं जानते हो, जब कि संसार के सभी लोग उनको जानते हैं।

पंचू—तो जरा मैं भी गेछो बाबा की कहानी सुनूं।

ऊधो—ये बाबा जिस पेड़ पर चढ़ जाएंगे, वही वृक्ष उनकी कृपा से कल्पतरु हो जाएगा। उस वृक्ष के नीचे खड़े होकर हाथ पसार कर जो मांगोगे वही मिलेगा।

पंचू—यह खबर तुम्हें मिली कहां से?

ऊधो—धोकड़ गांव के भेकू सरदार से मुझे यह खबर मिली। उस दिन 'बाबा' गूलर के पेड़ पर बैठे पैर हिला रहे थे। भेकू इनको नहीं जानता था। वह उस वृक्ष के नीचे से जा रहा था। उसके माथे पर मिट्टी के बर्तन में गुड़ था, तम्बाकू बनाने के लिए। 'बाबा' के पैर की ठोकर लगने से वह गुड़वाला बर्तन गिर पड़ा तो भेकू की आंखों और मुंह में वह गुड़ भर गया। 'बाबा' तो दयालु थे। बोले—'भेकू, तुम्हारे मन में किस चीज की इच्छा है? साफ-साफ बताओ।' भेकू तो बुद्धु था। उसने कहा—'बाबा, एक कपड़ा दीजिए जिससे मैं अपना मुंह पोंछ सकूं।' मांगते ही एक गमछा उस वृक्ष से गिरा। आंखों और मुंह को पोंछकर जब उसने ऊपर देखा, तब कोई भी उसे दिखाई नहीं दिया। तुम्हें जो कुछ मांगना हो, केवल एक बार ही मांगना। उसके बाद रोते-रोते यदि बादल भी फट जाएं तब भी बाबा तुम्हें नहीं मिलेंगे।

पंचू—हाय रे! न शाल मांगा न दुशाला, मांगा तो एक गमछा। भेकू में भला बुद्धि ही कितनी है।

ऊधो—सो तो है ही। भेकू का काम गमछे से ही भली भांति चल रहा है। क्या तुमने नहीं देखा, 'रथतला' के निकट ही आठ तल्ला मकान उसने बना लिया है। गमछा है तो क्या हुआ, है तो 'बाबा' का ही दिया।

पंचू—यह कैसे हुआ? उन्होंने क्या जादू किया?

ऊधो—होंदल पाड़ा के मेले में भेकू उस दिन बाबा के गमछे को बिछाकर बैठ गया। हजारों लोग उसके पास आकर जमा हो गए। बाबा के नाम के कारण रुपया, पैसा, आलू, मूली आदि सभी चीज़ें चारों तरफ से उस गमछे के ऊपर पड़ने लगीं। कोई स्त्री आकर कहती 'भेकू दादा, मेरे लड़के के ललाट से इस गमछे को लगा दो। आज तीन महीने से यह बुखार का कष्ट भुगत रहा है।' नियम है कि उनके लिए सवा रुपये का नैवेद्य, पांच सुपारियां, पांच पाव चावल तथा पांच छटाक घी चाहिए।

पंचू—नैवेद्य तो उन्हें मिल रहा है, फल कोई देता है या नहीं?

ऊधो—हां, हां, उनको फल भी मिल रहे हैं। गाजन पाल ने इस गमछे में पन्द्रह दिन तक धान रक्खे, उसके बाद इस गमछे के कोने में एक रस्सी बांधी, तथा उसी रस्सी से एक बकरे को बांध दिया। इस बकरे की आवाज को सुनकर चारों तरफ से लोग आने लगे। भाई, मैं तुम्हें क्या बताऊं! कुछ महीने के बाद ही गाजन को अच्छी नौकरी मिल गई।

पंचू—क्या सच कह रहे हो?

ऊधो—सच नहीं तो और क्या। गाजन तो मेरे ममेरे भाई के साढ़ू का भाई है।

पंचू—अच्छा ऊधो भाई, क्या तुमने उस गमछे को देखा है?

ऊधो—हां, अवश्य देखा है। हटूगंज के तांत पर जो डेढ़ गज लंबाई के गमछे बुने जाते हैं, उनकी किनारी लाल रंग की और सारा गमछा चम्पई रंग का होता है। बिलकुल विचित्र है।

पंचू—अरे भाई, क्या कहते हो! तब वह वृक्ष के ऊपर से गिरा कैसे?

ऊधो—यही तो मज़ेदार बात है। वह सब बाबा की दया है।

पंचू—चलो भाई, उनको ढूंढ़ने के लिए चलें। लेकिन उन्हें हम लोग पहचानेंगे कैसे?

ऊधो—यही तो मुश्किल है। उन्हें तो किसी ने भी नहीं देखा। बच्चू भेकू की आंखें तो उस गुड़ से सन गई थीं। तुम भी चाहो तो वैसे ही हो जाओ।

पंचू—तब और क्या उपाय है?

ऊधो—मैं तो घाट-बाट में जिसको भी देखता हूं, हाथ जोड़कर उसी से पूछता हूं, 'कृपा करके बताइए कि क्या आप ही ''गेछो बाबा'' हैं।' इसे सुनकर वे लोग मारने को दौड़ते हैं। एक ने तो मेरे सिर पर हुक्के का पानी ही उड़ेल दिया था।

गोबरा—उसे उड़लने दो। अब तो उसे छोड़ना नहीं है। किसी भी तरह से उसे खोज निकालेंगे। फिर भाग्य में जो भी हो।

पंचू—भेकू कहता है कि पेड़ पर चढ़ने से ही 'बाबा' का चेहरा दिखाई पड़ता है। वे जब नीचे रहते हैं तब उन्हें पहचाना नहीं जा सकता।

ऊधो—भाई, पेड़ पर चढ़कर आदमी की पहचान किस तरह की जाएगी? मैंने एक समझ का काम किया है। मेरा जो आमड़े का पेड़ है वह आमड़ों से लदा हुआ था। इसलिए मैं जिसे भी देखता, उसी से कहता कि कुछ आमड़े तोड़ लो। पेड़ अब करीब-करीब खाली होने को आ गया है। पेड़ की बहुत-सी डालियां भी टूट गई हैं।

पंचू—चलो, अब देरी मत करो। भाग्य ने साथ दिया तो उनका दर्शन अवश्य होगा। भाई! गला खोलकर एक बार उन्हें पुकारो—'गेछो बाबा, बाबा, दयालु बाबा, इस घने वन में यदि तुम कहीं छिपे हुए हो तो एक बार आकर हम अभागों को दर्शन दो।'

गोबरा—अरे, लगता है, उनकी दया हम लोगों के ऊपर है।

पंचू—कहां हैं रे, कहां हैं?

गोबरा—अरे इस 'चालता' पेड़ के ऊपर।

पंचू—कहां रे, चालता (चकोतरा) के पेड़ के ऊपर तो कुछ भी नहीं देख पा रहा हूं।

गोबरा—यह जो हिल रहा है।

पंचू—क्या हिल रहा है? वह तो किसी की पूंछ है।

ऊधो—अरे गोबर, तुम्हारी भी कैसी अक्ल है! यह बाबा की पूंछ नहीं है, बल्कि यह तो लंगूर की है। देख नहीं रहे हो, मुंह से चिढ़ा रहा है।

गोबरा—सचमुच यह घोर कलियुग है। हम लोगों को भुलाने के लिए बाबा ने बंदर का रूप धारण किया है।

पंचू—बाबा! हम लोग भूलनेवाले नहीं हैं। हम लोगों को तुम अपना काला मुंह दिखाकर भुला नहीं सकते। जितना भी हो सके, मुंह से चिढ़ाओ। हम लोग हिलने-डोलनेवाले नहीं हैं। अब तो हम लोगों ने तुम्हारी इसी श्री पूंछ की शरण ली है।

गोबरा—अरे! बाबा ने तो खूब कूद-कूदकर भागना शुरू कर दिया है।

पंचू—भागोगे कहां? हम लोगों की भक्ति के रहते तुम जाओगे कैसे?

गोबरा—अरे, ये तो बेल की एकदम ऊपरी शाखा पर बैठे हुए हैं।

ऊधो—पंचू, तुम पेड़ के ऊपर चढ़ जाओ न।

पंचू—तुम्हीं चढ़ जाओ।

ऊधो—नहीं, नहीं, तुम्हीं चढ़ो।

पंचू—हे बाबा, उतने ऊंचे हम लोग नहीं चढ़ सकेंगे, इसलिए कृपा करके आप नीचे उतर आइए।

ऊधो—हे बाबा, आशीर्वाद दीजिए। आपकी इसी श्री पूंछ को पकड़कर मृत्यु के समय आंखें मूंद सकूं।

□ रवीन्द्र नाथ ठाकुर

('बालभारती' से साभार)

दिन एक - सूर्य अलग-अलग

मई अंक में 'गर्मी का रहस्य' नामक लेख में यह समझाने की कोशिश की गई थी कि कुछ महीनों में अधिक गर्मी क्यों पड़ती है। यह तुमने समझ लिया होगा कि ऐसा सूर्य की बदलती स्थिति के कारण ही होता है। यदि हम किसी एक दिन के सूर्य के आकाशीय पथ का चित्र बनाते हैं और एक माह बाद किसी और दिन का। तो दोनों चित्रों में सूर्य की स्थिति में अंतर होगा। हां दोनों दिनों में सूर्य का आकाशीय पथ पूर्व से पश्चिम की तरफ ही होगा। परंतु दूसरे चित्र में पथ के खिसकने की दिशा क्या होगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमने किन महीनों में ये अवलोकन लिए हैं। कहने का मतलब यह है कि साल भर में सूर्य का आकाशीय पथ बदलता रहता है। और इसी कारण मौसम में बदलाव होता है।

यह तो हुई साल भर की बात। परंतु एक ही दिन में सूर्य की स्थिति में भी अंतर देखा जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम सूर्य को कहां से देख रहे हैं। पर इस बार अंतर का कारण पृथ्वी की गोलाई होगा।

'गर्मी का रहस्य' लेख में हमने भोपाल में (कर्क रेखा पर) सूर्य की साल भर बदलती स्थिति का वर्णन किया था। यहां उन स्थितियों का चित्रांकन किया गया है (देखो पिछले आवरण के अंदर का हिस्सा)। साथ में उत्तरी गोलार्द्ध की तीन और जगहों का वर्णन है - उत्तरी ध्रुव पर, 50 अक्षांश पर (किसी यूरोपीय देश की स्थिति) और विषुवत् रेखा पर। जो चार दिन लिए गए हैं वे हैं - 21 मार्च, 21 जून, 23 सितंबर तथा 21 दिसंबर। यदि तुम दक्षिण गोलार्द्ध की स्थिति की कल्पना करना चाहते हो तो 21 जून तथा 21 दिसंबर के चित्रों को आपस में बदल दो।

पहले चित्र में पूर्वी क्षितिज पर सूर्योदय का स्थान तथा दूसरे चित्र में सूर्य के आकाशीय पथ का चित्रांकन है। इन चित्रों को देखने/ समझने के पहले इनमें दिशा पर ध्यान दो। **पहले चित्र** (सूर्योदय का स्थान) में जहां सूर्य दिखता है वह पूर्व दिशा है। और आगे या हमारी तरफ का हिस्सा पश्चिम होगा। बाईं ओर उत्तर तथा दाईं ओर दक्षिण दिशा होगी। **दूसरे चित्र** (सूर्य का पथ) में सूर्य पूर्व से पश्चिम की ओर जा रहा है। इसलिए चित्र के बाईं ओर पूर्व है, दाईं ओर पश्चिम, पीछे की ओर दक्षिण तथा सामने की ओर उत्तर है।

यहां हम चित्रों के आधार पर केवल उत्तरी ध्रुव, 50 अक्षांश तथा विषुवत् रेखा की स्थितियों के बारे में कुछ बात करेंगे। पर भोपाल के बारे में नहीं। कारण आगे स्पष्ट होगा।

चित्र 2 को देखो। उत्तरी ध्रुव में सूर्य का पथ पूरे साल क्षितिज के पास है, परंतु विषुवत् रेखा पर सूर्य क्षितिज से इतना ऊपर है कि वह चित्र में नहीं दिखता है (यहां **नहीं दिखने** का अर्थ यह नहीं है कि सूर्य आकाश में कहीं होगा ही नहीं। बल्कि यह है कि अगर हम पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हों तो सूर्य हमारी नज़रों से ऊपर होगा। और जब तक हम अपनी नज़र ऊपर आकाश की तरफ न उठाएं सूर्य नहीं दिखेगा)। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विषुवत् रेखा पर सूर्य साल भर लगभग मध्य आकाश में सिर के ऊपर से गुजरता है।

अब 50 अक्षांश की स्थिति देखो। मार्च और सितंबर में सूर्य का पथ लगभग एक जैसा है, परंतु जून में पथ ऊंचा है, और दिसंबर में क्षितिज के पास। यदि हम किरणों तथा पृथ्वी की सतह के बीच का कोण नापें तो वह जून में $63\frac{1}{2}^\circ$ तथा दिसंबर में केवल $16\frac{1}{2}^\circ$ होगा। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सबसे अधिक गर्मी जून में तथा सबसे अधिक ठंड दिसंबर में होती है।

अब 50 अक्षांश पर सूर्योदय की स्थिति देखो। जून से दिसंबर तक सूर्योदय का स्थान दाईं ओर सरकता है यानी दक्षिण की तरफ। यह दक्षिणायण की स्थिति है। दिसंबर के बाद सूर्योदय का स्थान बाईं ओर सरकता है। दिसंबर तथा मार्च की स्थिति की तुलना करो, और फिर मार्च तथा जून की। सूर्य का उत्तरायण है - दिसंबर से जून। मार्च और सितंबर में सूर्योदय का स्थान लगभग समान है।

अब सूर्योदय की दिशा पर ध्यान दो। 50 अक्षांश पर यह दिशा हमेशा दक्षिण की ओर है परंतु कोण बदलता है। यह कोण जून में सबसे अधिक और दिसंबर में सबसे कम है। विषुवत् रेखा पर सूर्योदय की स्थिति कुछ अलग है। मार्च और सितंबर में सूर्य सीधा आकाश में चढ़ता है। परंतु जून में सूर्य मार्च-सितंबर की तुलना में थोड़ा बाईं ओर से (उत्तर, उदय होता है और दिसंबर में दाईं ओर से (दक्षिण)। यानी जून में विषुवत् रेखा पर अपनी परछाईं उत्तर की तरफ होगी और दिसंबर में दक्षिण की तरफ। पर ध्रुवों पर स्थिति अलग होगी। उत्तरी गोलार्द्ध में परछाईं हमेशा उत्तर की तरफ होगी और दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण की तरफ।

एक और बात पर ध्यान दो। सूर्योदय वाले चित्र (चित्र 1) में सूर्योदय का समय दिया गया है। विषुवत् रेखा पर सूर्योदय का समय साल भर एक ही रहता है। पर 50 अक्षांश पर ऐसा नहीं है। मार्च-सितंबर में सूर्योदय का समय एक ही है, पर जून में सूर्योदय जल्दी होता है और दिसंबर में देर से। यदि हम सूर्यास्त का समय भी देखें (चित्र में नहीं है) तो पता चलेगा कि सूर्यास्त जून में देर से होता है और दिसंबर में जल्दी। इससे निष्कर्ष निकलता है कि दिन-रात की लंबाई भी साल भर एक सी नहीं रहती।

अब उत्तरी ध्रुव की स्थिति देखो। मार्च और सितंबर में सूर्य क्षितिज को छूता हुआ चलता है। जून में वास्तव में सूर्य उदय या अस्त होता ही नहीं है, वह हर समय आकाश में ही दिखता है। इसके विपरीत दिसंबर में सूर्योदय होता ही नहीं है, फिर तो उसके दिखने और अस्त होने का सवाल ही नहीं उठता। इसका अर्थ यह है कि उत्तरी ध्रुव पर सूर्य मार्च से सितंबर तक (6 माह) दिखता है और अगले 6 माह यानी मार्च तक दिखाई नहीं देता। साफ बात है कि उत्तरी ध्रुव में 6 माह का दिन और 6 माह की रात होती है। दक्षिणी ध्रुव में भी ऐसा ही होता है पर विपरीत महीनों में।

अब तक इन चित्रों की मदद से तुम्हारी कुछ समझ बनी होगी। यहां हम कुछ सवाल दे रहे हैं। सवालों के दो उद्धेश्य हैं। पहला, यह कि भोपाल के चित्रों का तुम खुद विश्लेषण करो। दूसरा, यह परखो कि तुम इन चित्रों को कितना समझ पाए हो। सवाल कुछ बिंदुओं पर आधारित हैं, उन पर ध्यान दोगे तो हल जल्दी निकलेगा।

अपने जवाब चकमक को भी भेजना उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

सूर्योदय का समय

1. यूरोप (50 अक्षांश) तथा भोपाल में सबसे लंबा तथा सबसे छोटा दिन किन महीनों में होगा और क्यों?
2. उत्तरी ध्रुव पर जून तथा दिसंबर में सूर्योदय का समय क्यों नहीं बताया गया है?

सूर्योदय का स्थान

3. उत्तरी ध्रुव पर जून में सूर्योदय का स्थान कहां है? दिसंबर में सूर्य क्यों नहीं दिखता है?
4. जून में यूरोप, भोपाल तथा विषुवत् रेखा पर सूर्योदय का स्थान मार्च की तुलना में किस दिशा में सरका है?
5. दिसंबर में, इन्हीं जगहों पर सूर्योदय का स्थान सितंबर की तुलना में किस दिशा में सरका है?
6. प्रश्न 4 और 5 के उत्तरों के आधार पर बूझो कि इन जगहों में उत्तरायण तथा दक्षिणायण किन महीनों के बीच होता है?

सूर्योदय का कोण

7. उत्तरी ध्रुव पर मार्च तथा सितंबर में सूर्योदय का कोण (तीर और क्षितिज के बीच) लगभग शून्य है। इसका क्या अर्थ है?
8. भोपाल में जून में तथा विषुवत् रेखा पर मार्च और सितंबर मे कोण 90° है। इसका क्या अर्थ है?
9. विषुवत् रेखा पर जून तथा दिसंबर में कोण विपरीत दिशाओं में है। इससे क्या निष्कर्ष निकलता है?
10. यूरोप तथा भोपाल में सूर्योदय का कोण (साल भर) किस दिशा में है? दोपहर (मध्याह्न) में सूर्य किस दिशा में दिखेगा?
11. यूरोप तथा भोपाल में, दिसंबर और जून में कोण के आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि सबसे अधिक गर्मी तथा सबसे अधिक सर्दी कहां होगी?
12. मार्च और सितंबर में भोपाल अधिक गर्म है या यूरोप? और क्यों?

सूर्य का आकाशीय पथ

13. उत्तरी ध्रुव पर दिसंबर में सूर्य क्यों नहीं दिखता?
14. अगर हम पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हों तो भोपाल में जून में (मध्यान्ह में) सूर्य क्यों नहीं दिखता है?
15. विषुवत् रेखा पर मार्च, जून तथा सितंबर में सूर्य क्यों नहीं दिखता है?
16. विषुवत् रेखा पर सबसे अधिक गर्मी कब पड़ती है—जून में या मार्च/सितंबर में?
17. दिसंबर में ठंड कहां अधिक होगी—भोपाल या यूरोप में? और क्यों?
18. यूरोप तथा भोपाल के चित्रों में सूर्य ऊपर-नीचे दिखता है। इसका क्या अर्थ है?

परछाईं दोनों चित्रों को ध्यान से देखकर बताओ—

19. भोपाल में जून में तथा विषुवत् रेखा पर मार्च तथा सितंबर में चीज़ों की परछाईं कहां और किस दिशा में पड़ रही है?
20. सबसे लंबी परछाईं कहां और कब पड़ रही है?
21. मार्च तथा सितंबर में परछाईं कहां अधिक लंबी होगी—यूरोप में या भोपाल में? और क्यों?
22. विषुवत् रेखा पर जून तथा दिसंबर में परछाईं किस दिशा में पड़ रही है, और क्यों?

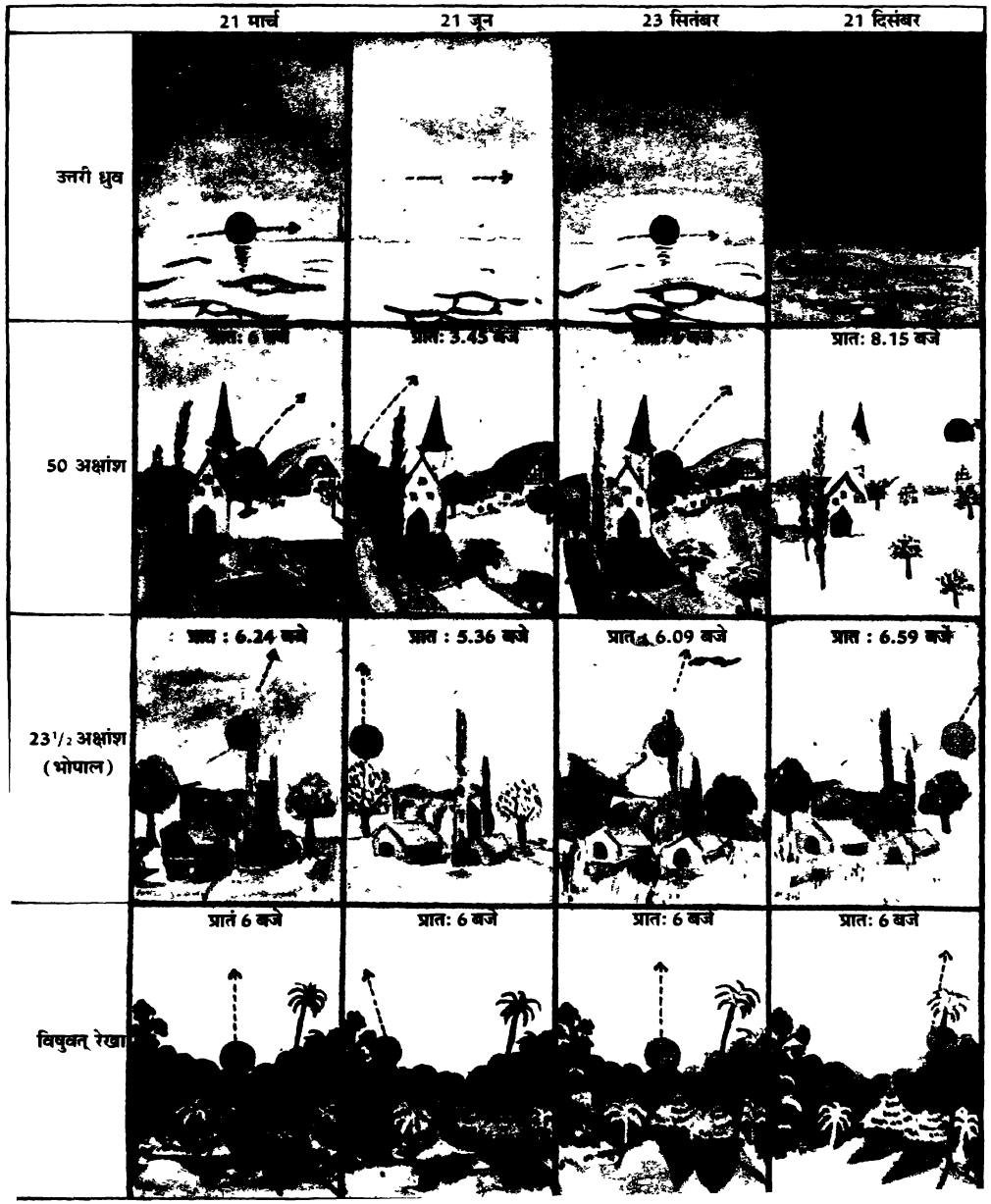
21 मार्च
21 जून
23 सितंबर
21 दिसंबर
उत्तरी ध्रुव
50 अक्षांश
प्रात: 8.15 बजे
23 1/2 अक्षांश (भोपाल)
प्रात : 6.24 बजे
प्रात : 5.36 बजे
प्रात: 6.09 बजे
प्रात : 6.59 बजे
विषुवत् रेखा
प्रातं 6 बजे
प्रात: 6 बजे
प्रात: 6 बजे
प्रात: 6 बजे

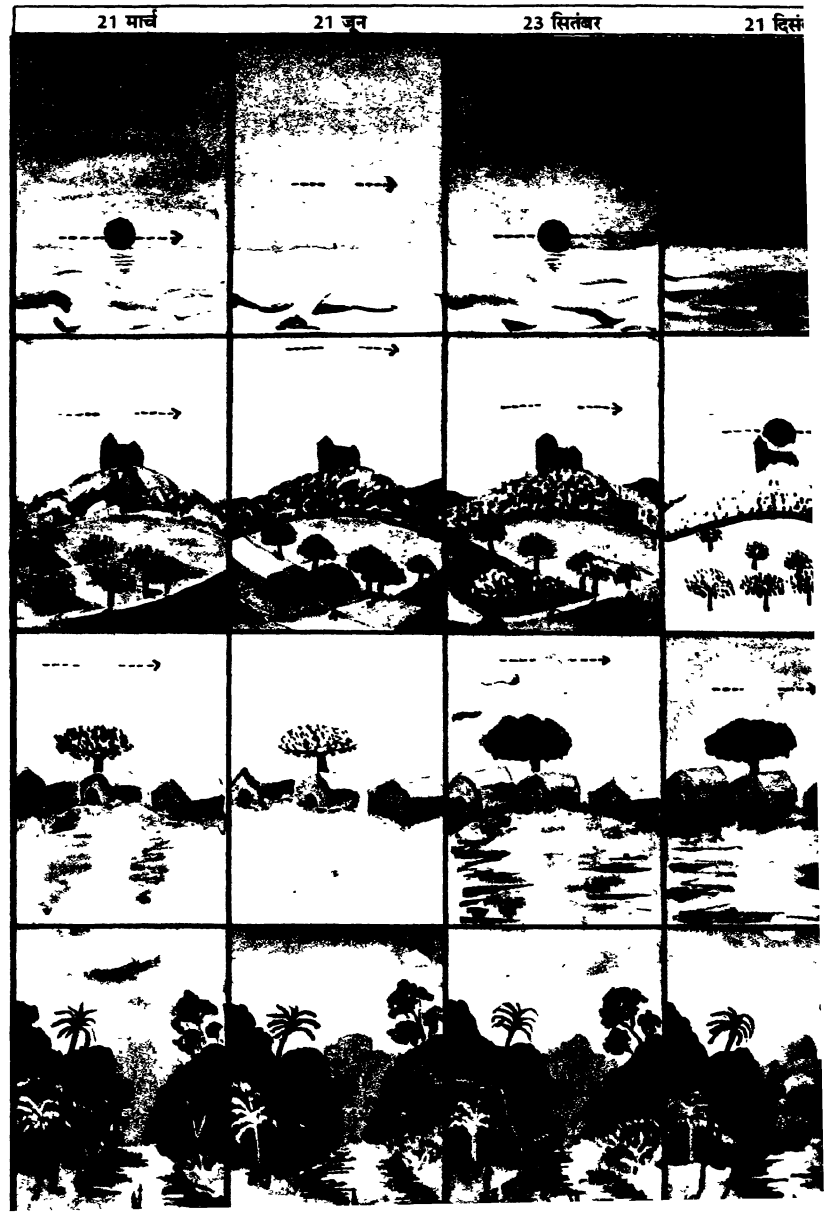
21 मार्च
21 जून
23 सितंबर

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/88

चकमक